॥ श्रीः ॥

श्री १०६ शिवरामपादपूजनम् ॥

अर्थात्

सृष्ट्यादिबहुविधविषयपूर्णो ग्रन्थविशेषः ॥
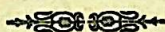
काशिकागस्त्यकुण्डवीथीस्थपूज्यपादपण्डित
वरद्विवेदश्रीरामनाथशर्मभिः संगृह्य
संशोध्य संस्कृत्य धर्मार्थं वितर-
णाय मुद्रयित्वाप्रचारितः ।

तत्पादपरिचारकेण नन्दकुमारशर्मत्रिपाठिनैतत्
पत्रं लिखितम् ।

१९७९ वैक्रमेऽब्दे	प्रथमावृत्तिः
माघ १५ गुरौ	पुस्तक संख्या १०००

शिवशंकर मिश्र द्वारा, भारत-प्रेस, काशी में मुद्रित ।

सर्वशास्त्रमयान् सर्वयोगदक्षाञ्जगद्गुरून् ॥ श्री ६ विशुद्धा-
नन्द नाम्न वाग्देवान् समुपास्महे ॥१॥ श्री ६ मद्भावानन्दतीर्थं
तपस्तरणिरश्मयः॥विकासयन्तुसततंहृद्ब्जानिमनीषिणाम्॥२॥
श्री ६ देवदत्तसुधियःकृपयामतिमे श्री ६ बालशास्त्रिणइमांविमलां-
विधाय॥विद्वच्छिरोमणयईशतउत्तमांश्री६ कैलासचन्द्रगुरवोवि-
तरोतुमोहाम्३मयनापार्वतोरत्नादेवकीसेवकोमनी॥लवङ्गोरुक्मि
णीदत्तोकस्तूरोचिरजोविनी१महादेवीमङ्गलाद्याःकाश्यां मुक्तिम-
वाप्नुवन्॥ मालतोललिताद्यास्युः शिवदेव्यनुगाःसदा २ रम्मूजी
शिववालकौतटयुगं श्री६ रामनाथःशशीजङ्गथ.द्यानलिनानिकेशव
सुखाद्यायस्यसांयात्रिकाः॥ नाथ्यारामकिशोरकीर्त्तिरूडुपंवीरूसु
मन्नूतिमिस्तस्यानन्युदधेस्तुरीयउदितःकल्लोलएषोऽनघः॥१॥ श्री
१००८भावानन्दतीर्थाङ्घ्रिकमलमधुपःकाशिकागस्त्यकुण्डवीथी
स्थोभूसुराशीर्वचनलवधनोरामनाथोद्विवेदः॥ शून्येष्वङ्केन्दुसं-
ख्ये१९५०न्टपमुकुटमणेर्विक्रमार्कस्यवर्षेसंगृह्यग्रन्थमेतंन्टपविजय
तिथावार्पयच्छंकरण्ड्ध्र्योः॥ १ ॥ लक्ष्मीनारायणो लक्ष्मीनाथो
लक्ष्मणपण्डितः॥ लक्ष्मीकान्तःसुधीर्लक्ष्मीशंकरःसन्तुहर्षिताः १
श्री महादेवाश्रमाञ् श्रीराजराजेश्वराश्रमान्॥ श्रीगौड़स्वामिनः
श्रीमत्पूर्णाश्रमयतीश्वरान् ॥ १ ॥ श्री विश्वरूपानन्दाञ् श्रीब्रह्मा-
नन्दान् मुनीश्वरान् ॥ श्रीभास्करानन्द संज्ञाञ्श्रीमत्पूर्णाश्रमान्
परान् ॥ २ ॥ श्री माधवाश्रमाञ् श्रीमद्दक्षिणामूर्तिसंज्ञकान् ॥
श्रीस्वप्रकाशाश्रमकाञ् श्रीमन्नारायणाश्रमान् ॥३॥ श्रीसाम्बशा-
स्त्रिणःश्रीमद्देवनाथाग्निहोत्रिणः ॥ सुविख्यातानिमांश्चान्यांस्ता-
पसान्समुपास्महे॥४॥चन्द्रनारायणोभट्टाचार्यःकाश्यांसमागतः
ढाकाप्रान्तात्पाठशालान्यायाध्यापकाग्रणीः॥१॥ कलिकाता पाठ-
शालासाहित्याद्यग्र्यपंडितः॥ जयनारायणोभट्टाचार्योऽन्तेकाशि-
माप्तवान्॥२॥श्रीराधामोहनोन्यायाद्यध्यापनमवेतनम्॥ अकरोत्
मरणंयावत्काश्यांविद्वत्सभाग्रणीः॥३॥काशीपाठालयन्यायाद्यध्या
पकशिरोमणिः॥ कालीप्रसादःकेदारोपासकोऽहरहःसदा ॥ ४ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ श्री१०८शिवरामपादपूजनस्य

संक्षिप्तो ग्रन्थोपक्रमः ॥

शिवदेव्यास्तपोमूर्त्तेर्मातुःपादाब्जजन्मनः ॥
पितुःश्रीद्विश्वनाथस्य कर्णाल्लेह्म्यादरान्मुहुः ॥ १ ॥

यद्यपि वेदपुराणादि बड़े बड़े निबन्धोंमे कोई भी व्यावहारिक वा पारमार्थिक वातबाकी नहीं है तथापि लिखने वालेकी बुद्धि शुद्धि व श्रोता लोगभी नाना विध अधिकारी हैं अतएव उच्चावच सभी तरहके लेखकोंका प्रयत्न वृथा नहीं होता, बल्कि उस प्रयत्न को बहुत लोग सराहते भी हैं इसका दृष्टान्त यह है कि जैसे समुद्रमें नाना विध रत्नादि भरेही हैं पर जो लोग प्रयत्न से उसे निकाल अपने व दूसरोंके काममें लाते हैं वे अवश्य श्लाघनीय होते हैं अथवा दुग्धादिमें यद्यपि घृतादि रहताही है तथापि जो प्रयत्नसे घृतको निकालके अलग करते हैं उनका प्रयत्न कभी विफल नहीं है क्योंकि दुग्ध के रस वीर्य विपाकादि से घृत का रस वीर्यविपाकादि सर्वथा भिन्न है अथवा भारी पत्थर के चटान में मूर्ति जो कोर के वनाई जाती हैं उसमें सेवाय अधिक पत्थर के निकाल देने के और कुछ भी प्रयत्न नहीं है तथापि वह भी प्रयत्न अवश्य सफल है क्यों-

कि जब तक वह प्रयत्न नहीं होता तवतक सर्व साधारण तत्तन्मूर्त्ति दर्शनादि जनित हर्षविषादादि रूप चित्त वृत्ति नहीं उत्पन्न होती इत्यादि सभी दृष्टान्त एतद्विषय में हो सकते हैं, तो यथा शक्ति लेखकों का भी यद्यपि इतनाही प्रयत्न है कि दश पाँच ग्रंथों को देख सुन के और उनकी वातों को घटाय बढ़ाय के इकट्ठा कर देना सो भी अवश्य वहुत लोगों का उपकारक होताही है तो इस अवसरमें एक २ विषयके तो बहुत से ग्रन्थ संगृहीत हैं पर ऐसा ग्रन्थ कोई नहीं सुन पड़ता कि जिसमें लौकिक वार्त्ता व शास्त्रीय वार्त्ता एक ही ग्रंथमें मिलें, यद्यपि आर्यविद्यासुधाकर नामक एक ग्रंथ नवीन किसी दाक्षिणात्य विद्वानने इस चालका संग्रह किया है पर वह ग्रंथ संस्कृत भाषामे संगृहीत है अतएव वह ग्रंथ जो संस्कृत भाषा के विज्ञ हैं उन्हीं का उपकारक होसकता है इसलिये उसमेंसे और इतस्ततः सेभी सब वातोंको एकत्रकर के मध्यदेश प्रचलित भाषामें यह संग्रह किया जाता है कि जिसमें अधिक लोगोंका उपकारहोवे और वहुतसी प्राचीन नवीन वार्ता सर्व साधारण को विदित होवे इति ।

॥ श्रीः ॥
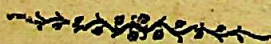
॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्री १०८ शिवरामपादपूजने ॥

॥ सृष्टिविचारः ॥

शिवदेव्यास्तपोमूर्त्तेर्मातुःपादाब्जजन्मनः ॥
पितुःश्री ८ विश्वनाथस्य कर्णाँल्लेह्म्यादरान्मुहुः ॥ १ ॥

कार्य दो प्रकार के होते हैं एक स्थावर और दूसरे जंगम, स्थावर वे हैं जोकि चलने फिरने बोलने आदिसे रहित हैं जैसे काष्ठ पत्थर आदि, और जंगम वे हैं जोकि चल फिर सकते हैं जैसे मनुष्य गौ महिष आदि, इन्हीं दोनों तरह के कार्यको लोक कहते हैं क्योंकि लोक धातु का देखना अर्थ है तो प्रकृतमें अनुभव अर्थ रख के और जो उस अनुभव में पदार्थ विषय होते हैं वही लोक शब्द के अर्थ हैं, सो लोक की अपार विचित्रता सभी बुद्धिमान लोगों के अनुभव में आती है और इसी विचित्रता के समझने समझाने के लिये महर्षिपतञ्जलि जैमिनि व्यास कणाद गौतम कपिल आदिकों ने जो सूत्र भाष्य आदि ग्रंथ बनाये हैं उन्हीं को (दर्शन) वा (शास्त्र) कहते हैं, क्योंकि उन्हीं ग्रन्थों से सब बात देखी दिखाई व सिखी सिखाई जाती हैं, तो उसमें बड़ा भारी झगड़ा इस बात का पड़ता है कि यह जो नाना विध कार्य गत वैचित्र्य हैं सो बिना कारण गत

वैचित्र्यके कभी उपपन्न नहीं हो सकता क्योंकि कारणके गुण कार्यमें अवश्य आते हैं जैसे मृत्तिकाके गुण घटमें तथा तन्तुके गुण पटमें इत्यादि, तो यदि असंख्यात कार्योंके असंख्यात कारण माने जावें तो बड़ा भारी गौरव होता है इसलिये दार्शनिक महर्षियोंने लाघव करके जहां तक होसका है वहांतक कारणको कमती ही करते गये हैं जैसे गौतम कणाद आदिने पृथिवी अप तेज वायु, इन चारोंके चार तरह के परमाणु अर्थात् अत्यन्त छोटे टुकड़े और आकाश काल दिक आत्मा और मन ए नव प्रकारके द्रव्य १ और रूप रस आदि चौबीस गुण २ और ऊपर जाना नीचे जाना आदि पांच प्रकार की क्रिया ३ गोत्व अश्वत्व आदि जाति ४ और विशेष ५ और समवाय ६ और अभाव ७ ए सात पदार्थ सब जगतके कारण माने हैं, कपिल आदिकोंने इससेभी लाघव करके सत्व रज तम ए तीन तरहके जड़ और चेतन पुरुष इतनेही को संपूर्ण जगत का कारण बताया है महर्षि व्यासने एक चेतनहीको जगत का कारण बताया है तो इनका सिद्धान्त सबसे मान्य है क्योंकि इनके मतमें सबसे ज्यादा लाघव है अब रही यह बात कि गौतम कणादादि महर्षियोंने इस लाघवपर क्यों नहीं ध्यान दिया तो इसका उत्तर इतनाही है कि जैसे भारी किसी कारखानेमें कुछ लोग जंगलसे लकड़ी काटने ही पर नियत रहते हैं और कुछ लोग उन लकड़ियोंको छील छालके दुरुस्त करने पर रहते हैं और कुछ लोग उन लकड़ियोंको चीरनेपर रहते हैं और कुछ लोग उन चीरी हुई लकड़ियोंको रन्दा आदि से साफ करके धरन किवाड़ा आदि चीजोंको तैयार करते रहते हैं तब वे चीजें पुल आदि के कामकी होती हैं इसी तरह सब महर्षियों ने मिल के एक दर्शन शास्त्र तैयार किया है जो कि हम

लोगोंकेकाममें आय सकता है क्योंकि पहिलेही स्थूल बुद्धि मनुष्य के मनमें अद्वैत ब्रह्मकी अपार जगत कारणता नहीं वैठ सकती इसलिये गौतम कणादादि निर्मित शास्त्रोंके अभ्याससे जब क्रमशः बुद्धि सूक्ष्म होती है तो उसका भी मनमें वैठना असम्भव नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष सिद्ध अत्यन्त सरल दृष्टान्त यह है कि बट वृक्ष का वीज अत्यन्त छोटा होता है और उसी से बड़ा भारी वृक्ष तैयार होता है तो अवश्य यह वात मान-नीय होगी कि वृक्ष के शाखा पत्र आदिकों में जितना वैचित्र्य है सभी उस छोटे से बीज में अवश्य है परंतु सर्वसाधारण उसकी प्रतीत वृक्षही में होती है हां जिनका अन्तःकरण योगाभ्यासादिसे परिशुद्ध होरहा है उनको उस वीज में भी उस वैचित्र्यका साक्षात्कार होता है इसी प्रकार क्रमशः बुद्धि शुद्धि होने पर अद्वैतब्रह्मकी अपार जगत कारणता भी मनमें वैठ सकती है यही वात तैत्तिरीयश्रुति में लिखा भी है।

(तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसम्भूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवीपृथिव्याओषधयः ओषधी-भ्योऽन्नम्)

अब इस जगह पर यह शंका होती है कि ऋग्वेद के अष्टमाष्टकके सप्तमाध्यायस्थ सप्तम वर्गमें सम्पूर्ण जगत का कारण हिरण्यगर्भको कहा है।

(हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमां कस्मैदेवायहविषाविधेम)

तथाऐतरेयब्राह्मणमें जगतकाकारण प्रजापतिको कहा है।

(प्रजापतिरकामयतप्रजायेयभूयान्स्यामितिसतपोतप्यत सतपस्तप्त्वेमांलोकानसृजत पृथिवीमंतरिक्षंदिवम्)

तथामनुस्मृतिकेप्रारम्भहीमें (ततःस्वयम्भूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम् महाभूतादिवृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः)

इत्यादि श्लोकोंसे स्वयंभूको जगतकारण कहा है सो उक्त तैत्तिरीय श्रुतिसे विरुद्ध पड़ता है, क्योंकि सर्वथा नाम रूपादि रहित आत्मा हिरण्यगर्भ वा पूजापति वा स्वयंभू कैसे हो सकता है इत्यादि तो इसका उत्तर इसीके आगे मनुस्मृति में लिखा है कि वही नाम रूप रहित परमात्मा केवल अपनी इच्छा से स्त्री और पुरुष ये दो तरह के रूपों को पहिले धारण करता है।

(द्विधाकृत्वात्मनोदेह मर्धेनपुरुषोभवत् । अर्द्धेननारीतस्यांस विराजम सृजत्पूभुः)

तात्पर्य यह है कि जितने नाम रूप हैं सभी परमात्मा ही के हैं पर जब तक सृष्टि नहीं होती तब तक वे सब नाम रूप अस्पष्ट रहते हैं और जब उस परमात्माको सृष्टि करनेकी इच्छा होती है तो क्रमशः उन्हीं अस्पष्ट नाम रूपों को वह स्पष्ट करता है तो अब यही सिद्ध हुआ कि उसी परमात्माके हिरण्य गर्भ पूजापति स्वयंभू इत्यादि नाम हैं और तत्तत् रूप भी सभी उसी के हैं और वही जगत का कारण भी है तो कुछ भी किसी वचन का किसी वचन से विरोध नहीं है।

अब इस जगह पर बहुत लोग इस बात पर विवाद करते हैं कि यह मनुष्यसृष्टि पूथम किस देशमें हुई और किधर से किधरको फैली तो एतद्विषय में कोई ऐसा कहते हैं कि जब महाप्रलय में संपूर्ण जगत जलमय होगया तो उस समय में काकेसस नामक पर्वतमें एक कोई पुरुष जीता बचा था तो उसीके संतानमेंसे कुछ लोग यूरोप खंडमें और कुछ लोग प्यारिस देश में घुसे तदनन्तर प्यारिस देश के लोग इतने बढ़े कि सिंधु नदी के दोनों किनारे फैल गये तो उन लोगों का देश नामसे सिन्धुनाम पहिले हुआ फेर क्रमशः क्रमशः वही नाम विगड़ के

हिन्दु नामसे आज तक चल रहा है इत्यादि शतपथ ब्राह्मण और भारत रामायण आदि में मत्स्यावतार की कथा इस चाल से लिखी है कि प्रलयकाल में जब संपूर्ण पृथिवी जल से पूर्ण होगई तो उस समय परमेश्वरने बड़े भारी मत्स्य का रूप धारण करके एक बड़ी भारी नौका को अपने सिर पर रखके किसी तरह बचाया उस नौकामें सपरिवार महाराज मनु और भी कुछ ऋषि लोग थे बाद जब प्रलय संकट बीता तो परमेश्वर की कृपासे मनुको सम्पूर्ण समृद्धि जब हुई तो मनुने क्रमशः सृष्टि किया इसीसे मनुष्य मानव मनुज इत्यादि नामसे मनुष्योंका व्यवहार होता हैं क्योंकि सबके मूल पुरुष महाराज मनु हैं। कोई कहते हैं कि मनुष्य मनुसे हुये और मनु देवतासे हुये और देवतावों का निवास स्वर्ग है।

(मनुष्यामनुतोजाता मनुर्देवतनूद्भवः। देवानांवसतिस्वर्गं इति श्रुत्यादिसंमतम्)

तो इससे यह सिद्ध होता है कि हिमालय पर्वतके उत्तर भाग की जो भूमि है वही मूल स्थान है क्योंकि आजतक भी उस देश में तिवेट नामसे देश प्रसिद्ध है और त्रिविष्टप स्वर्गका नाम कोषादिकों में प्रसिद्ध है तो संभव है कि त्रिविष्टप शब्द ही का अपभ्रंश तिवेट हुआ होगा इत्यादि कोई कहते हैं कि मनुस्मृति के द्वितीयाध्याय के प्रारंभ ही में कुरुक्षेत्र मत्स्य पंचाल आदि देशों की महिमा लिखी है।

(कुरुक्षेत्रं चमत्स्याश्चपंचालाः शूरसेनकाः। एषब्रह्मर्षि देशोवै ब्रह्मावर्त्तादनन्तरः)

इत्यादि शतपथ ब्राह्मण के प्रवर्ग्यकाण्डमें भी कुरुक्षेत्र की महिमा दिखाई है।

तेषांकुरुक्षेत्रं देवयजनमासतस्मादाहुःकुरुक्षेत्रं देवानांदेवयजनम्)

जावालोपनिषदमें भी कुरुक्षेत्र की महिमा कहा है ।
(यदनुकुरुक्षेत्र देवानां देवयजनंसर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम्)
(इमंमेगंगेयमुनेसरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्ण्या असिक्न्यामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्या सुखोमयासितासिते सरितेयत्रसंगते तत्राप्लुतासोदिवमुत्पतन्ति ।

इत्यादि ऋग्वेदादिके मन्त्रोंसे गंगा जमुना आदिकी प्रशंसा कही है और कृष्णयजुः संहिताके प्रथमकाण्डके अष्टम प्रपाठकके दशम अनुवाकमें ।

(येदेवादेवसुवःस्थतइममामुष्यायणमनमित्राय सुवध्वम् महतेक्षत्राय महतआधिपत्याय महतेजानराज्यायैषवो भरताराजासोमोस्माकं ब्राह्मणानांराजा ।)

इस मंत्रसे भरतखण्डका महिमा कहा है तो इनसब बातोंसे यही मालूम होता है कि जो कुरुक्षेत्र आदि पवित्र देश श्रुतिस्मृतित्यादिकोंमें दिखाये हैं वही मनुष्योंके मूल उत्पत्ति स्थान हैं इत्यादि । और इन सबमें परस्पर एकका दूसरा खण्डन भी अपनी अपनी युक्तियोंके बलसे करते हैं । तो एतद्विषयका ठीक ठीक निर्धारण तो बहुत ही कठिन है क्योंकि युक्ति बुद्धिके प्रावल्यसे प्रबल होजाती है पर इतना अवश्य विचारणीय है कि जब प्रलयकालमें कुछ भी सृष्टि न थी तब देश विभाग भी कैसे रहसकता है हांक्रमशः सृष्टि होनेके बाद मनुष्योंने वा देवताओंने अपने २ व्यवहारके अनुकूल देशविभाग भी किया होगा । तो पहिले सृष्टि किस देशमें हुई इस बातका विचार करना सर्वथा आकाश पुष्पके गन्धके विचारके समान होता है और यह सृष्टि क्रम अनेक तरहसे अनेक पुराण आदि ग्रन्थोंमें दिखाया है जैसे कि कश्यप की दिति अदिति विनता और कद्रू ए चारस्त्रियाँ थी इनमें दितिसे दैत्य अदितिसे आदित्ये

(देवता) विनतासे गरुण अरुण कद्रु से सर्प इस प्रकारसे सृष्टि हुई तो अब कश्यप को देवता वा मनुष्य क्या कहेंगे इसी प्रकार मनुसे यदि सम्पूर्ण सृष्टि है तो मनुको ब्राह्मण व क्षत्रिय आदि कौन जात कहेंगे फेर यदि ब्रह्मदेवने सृष्टि बनाया तो कहाँ बैठें किन चीजोंसे सृष्टि बनाया इत्यादि शंकाओंका उत्तर भी कठिन पड़ेगा इसलिये यही कहना सरल होगा कि परमेश्वर की लीलाका कार्य कारण भाव सब मनुष्यके मनमें नहीं आय-सकता सोई बात महिम्नस्तोत्रमें लिखा भी है।

(किमीहः किं कायः सखलु किमुपायास्त्रिभुवनङ्किमाधारोधाता सृजति कि मुपादान इतिच अतर्क्यैश्वर्येत्वय्यनवसरदुस्थोहतधियः कुतर्कोयङ्काँश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।)

तो यही सिद्ध होता है कि सृष्टिके पहिले देशविभागादि भी नहीं था किन्तु सृष्टि होने पर देशविभागादि भी हुआ तो सब सृष्टिका देश वही आकाश रूप परमात्माही है जोकि श्रुतियोंमें। (नित्यम्परमसर्वगतं सुसूक्ष्मं)

इत्यादि वाक्योंसे दिखाया है। अब रहा यह विवाद कि भारतवर्षके मनुष्य पहिले उत्पन्न हुये हैं। वा यूरोपखण्ड आदिके मनुष्य पहिले हुये हैं तो एतद्विषयमें।

(शतञ्जीवशरदोवर्द्धमानः शतंहेमन्ताञ्छतमुवसन्तान्।)

इस वैदिक वाक्यको प्रमाण करके यूरोपखण्डके लोग कहते हैं कि पहिले शीतप्रधान देशमें मनुष्य सृष्टि हुई क्योंकि इस वाक्यमें हेमन्त ऋतुका नाम दिखाया है इत्यादि इसका खण्डन भी बहुत लोग इस चालसे करते हैं कि इस भरतखण्डमें छवों ऋतुओंका यथार्थ परिचय है तो सभी ऋतुओंका नाम ले सकते हैं तो उसमें किसी ऋतुके नाम लेनेसे कोई बात स्थिर नहीं होती हां यदि यह देश इतना उष्ण प्रधान होता कि इसमें

हेमन्त आदि ऋतुओंका परिचय होना ही कठिन होता तो कथञ्चित्त यह बात संभव होता कि पहिले भरतखण्डमें सृष्टि नहीं हुई और भरतखंडान्तर्गत तत्तद्देशोंके ब्रह्मावर्त्त आर्यावर्त्त इत्यादि नामोंसे भी यह ज्ञात होता है कि आर्य (हिन्दू) और ब्राह्मण आदिकोंका यही उत्पत्ति स्थान है क्योंकि आवर्तन शब्दका उत्पत्ति अर्थ ।

(आब्रह्मभुवनांल्लोकात्पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्यतुकौन्तेय पुनर्जन्मनविद्यते (नसपुनरावर्त्तते नसपुनरावर्त्तते)

इत्यादि स्मृति श्रुतियोंमें प्रसिद्ध है और मनुस्मृति के द्वितीयाध्यायके । '
(तस्मिन्देशेयआचारःपारम्पर्यक्रमागतः। एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः)

इन वाक्यों सेभी भरतखण्डान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तादिदेशोंकी बड़ीभारी महिमा दिखाईगई है तोइससे भीयही स्थानमूलोत्पत्तिस्थानमालूम पड़ता है। औरजो हिन्दू इस नामसे सिन्धु नद के किनारे पहिले सृष्टि हुई यह कल्पना करते हैं उस जगह पर यहभी कल्पनाहो सकती है कि पहिले देशान्तरीय लोग उसी रास्तेआयेहोंतो उनकोसिन्धु नदके किनारेही पहिले सृष्टि मिलीहो तोउन लोगोंने इसी नामसे व्यवहार प्रारम्भ किया हो। और जो काकेसस पर्वतमें एक मनुष्यका बचनाकहा है सो तो सर्वथा असम्भव है क्योंकि यदि महा प्रलयमें सम्पूर्ण पृथिवी जल से पूर्ण होगई। तोकाकेससपर्वत कैसे बच सकता है। यदि यह कहें कि कुछ पृथिवी का भाग महाप्रलय मेंभी बचा था तोभी यह निश्चय कैसे होसकता है कि सेवाय काकेससके और भरतखण्डान्तर्गत हिमालयादि का कोई भी टुकड़ा नहीं बचा। और जो तिबेटदेश को त्रिविष्टप (स्वर्ग)

कहते हैं सोभीश्रुतिस्मृति आदि ग्रंथोंसे सर्वथा विरुद्ध है क्यों-
कि तिबेट देशभूलोकान्तर्गत है और स्वर्ग कोसभीजगह
भूलोक से पृथक कहा है इत्यादि। सो यह सब खण्डन मण्डन
ऊपर ऊपर से जिनकी दृष्टिहैउन्ही को आनन्ददायक हो सकता
है क्योंकि श्रुति स्मृति आदिकोंका सिद्धान्त यही स्थिर होता है
कि ईश्वर सर्वदेश सर्वकाल का व्यापक है और वही सृष्टिका
मूल कारण है तो उसी के इच्छासे पहिले सृष्टि हुई बाद देश
विभागादि हुये अब रही यह बात कि किसी देश से देशान्तर
मे भी जो मनुष्य जाय बसे तो एतद्विषयमे सभी संभव है कि
यूरोपखण्ड आदिके मनुष्य भरतखण्ड मे वा भरतखण्ड के
मनुष्य यूरोप आदि खण्डमें जाय बसे सोसब आजतक प्रत्यक्ष
सिद्ध है इति ॥ अब इस बातका विचार किया जाता है कि ए
ब्राह्मण क्षत्रिय आदि जातिविभाग नबीनहै वा प्राचीन है तो बहुत
लोग यह कहते हैं कि मनु महाराजसे यदि संपूर्ण मनुष्य सृष्टि
ग्रंथोंमें लिखी है तो प्रारम्भमें एक ही जाति सब मनुष्योंकी होनी
चाहिये क्योंकि मूल पुरुष मनुकी एकही कोई जाति रही होगी
इत्यादि। और कोई कहते हैं कि यह जातिका बिवेक मनु
आदि स्मृतियोंमें लिखा है।

(ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्य स्त्रयोवर्णा द्विजातयः चतुर्थ एकजाति-
स्तुशूद्रोनास्तितुपञ्चमः)

इत्यादि और श्रुतियोंमें भी जाति बिवेक लिखा है।

(ब्राह्मणोस्यमुखमासीत् बाहूराजन्यः कृतः ऊरूतदस्ययद्वैश्यः
पद्भ्यांशूद्रो अजायत)(ब्राह्मण स्त्वाशतक्रतउद्वंशमिवयेमिरे)
(पञ्चजनाममहोत्रंयुषध्वम्) (यत्पांचजन्ययाविशा) (त्यान्नु
क्षत्रियाँअव आदित्यान्याचिषामहे)

इसीकी व्याख्या निरुक्तमें कही है कि निषादः पंचमः और

निषादपदसे सभी संकीर्णजाति लियीजाती हैं तो इन वेदोंके वाक्योंसे ब्राह्मणादि जाति विभाग प्राचीन ही मालूम पड़ता है इत्यादि । तो एतद्विषयमें ज्यादाक्षोदक्षेमकरनातो अधिकही होगा परन्तु इतनी अवश्यहैकि ईश्वरके इच्छाके बिना एक पत्ताभी नहीं हिलसकता तो जातिविभागभी अवश्य ईश्वरेच्छाधीन ही मानना चाहिये अब रही यह बात कि यह जाति विभाग कबसे हैं तो इसका भी उत्तर होही चुका कि जबसे श्रुति स्मृतिआदि ग्रन्थ हैं उसके पहिलेसे यदि जाति विभाग न होता तो उन ग्रन्थोंमें जाति विभाग कैसे दिखाते तो इससे अवश्य यह स्थिरहोताहै कि जबसे वेदादि ग्रन्थ हैं तभीसे जाति विभाग भीहै । 'अब इन ब्राह्मण आदि जातियोंका क्या लक्षणहै और क्या कामहै इत्यादि बातें मनुस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृति आदि ग्रन्थोंमें विस्तरसे दिखाया है । अब संकर जाति प्राचीनहै वा नवीनहैं इसकाभी उत्तर पूर्वोक्तयास्क मुनिप्रणीत निरुक्त ग्रन्थसे होही चुकाहै क्योंकि जब उनने वेदोक्तनिषादपदको सम्पूर्ण संकरजातिका उपलक्षण कहाहैतो अर्थात् यह बात सिद्ध होती है किसभी संकरजाति वेद बोधित है अतएव प्राचीनहै अब रही यह बात कि दिन दिन संकरसे संकरजाति बहुत सी बढ़तीही जाती है सोभी मनुस्मृतिके दशवांध्याय में बहुतसी संकरजातियोंको दिखायके इसी तरह की और भी संकरजाति क्रमशः समझ लेना इत्यादि कहा है क्योंकि उन संकर जातियोंकी गिनती होही नहीं सकती तो कोई भी उसे कैसे गिनाय सकता है और उनके परिचय काभी उपाय कर्मआदि उसीमनुस्मृतिमें लिखा है । हिन्दू लोग कहते हैंकि जैसे अम्बष्ठ और निषाद आदि संकरजाति आर्यों से उत्पन्न हैं इसी प्रकार शकयवन चीन आदि जाति भी

इन्हीं ब्राह्मणादिकोंही से उत्पन्न हुई हैं क्योंकि मनुस्मृति के दशवां ध्यायमे लिखा है कि धीरे धीरे क्षत्रिय जातियों का कर्म लोप होनेसे और निकृष्ट देशोमें राज्यादि लोभसे चले जानेसे यह यवन आदि जाति हुई हैं।

(शनकैस्तुक्रियालोपादिमाःक्षत्रियजातयःवृषलत्वंगतालोके ब्राह्मणादशनेनचपौण्ड्रकाश्चोड़द्रविडाःकाम्बोजायवनाःशकाः पारदापह्लवाश्चीनाः किरातादरदाः खशाः मुखबाहूरुपज्जानांयालोके जातयोवहिःम्लेच्छवाचश्चार्यवाचस्तेसर्वेदस्यवःस्मृताः)

इत्यादि और भी पितृ मातृ स्वसृ भ्रातृ दुहितृ इत्यादि शब्दों का भाषान्तरमें थोड़ाही परिवर्तन अबतक देख पड़ता है तो इससे भीयह बात मालूम पड़ती है किपहिले इनसबकामूल पुरुष एकहीथा और देशभी इन लोगोंका एकहीथा और भाषा इन लोगोंकी एकही थी क्रमशः देश भेदहोनेसे आचरण और भाषा आदि भिन्न होगये तो इस्से भी यही सिद्ध होता है कि और भीयवन आदि जाति आर्य जाति मूलकही हैं इत्यादि हाँ इतनी बात अवश्य हैं कि यद्यपि सभीं मनुष्य जाति मात्र मन्वादिस्मृतियोंके देखनेसे आर्यजातिमूलकही ठहरती हैं परजिन आर्योंने अपनादेश और अपना कर्म धर्म आदि नहीं छोड़ा वे आज तक यथास्थित आर्य जाति बने हैं और जिनने राज्य आदिके लोभसे अपना कर्म धर्म व अपना देश छोड़ दिया वे ही अनार्य धर्मावलम्बी अनार्य जातिसे व्यवहृत होतेहैं इत्यादि अब यह यदि विचार किया जावे कि आर्य देशीय मनुष्यों के उत्पत्ति का कौन समय है तो इसका भी ठीक ठीक निर्धारण होना कठिन है क्योंकि कोई प्रमाण इसका पूरा पूरा नहीं मिलता हां इतनी बात अवश्य है कि ऋग्वेद के तृतीयाष्टक के छठवें अध्याय में आर्यपद कहा है।

अहंभूमिमददामार्यायाहंवृष्टिंदाशुषेमर्त्याय।

तो इससे यह स्थिर होता है कि यह आर्य मनुष्यों की सृष्टि परम प्राचीन है क्योंकि वेद आदि ग्रन्थोंमें लिखी है।

अब बहुत लोग यह कहते हैं कि आज कल्ह के मनुष्यों से सौ दोसौ बरस के पहिले के मनुष्य अत्यन्त कम बुद्धिमान मालूम पड़ते हैं तो इस बातके बिचारने से क्रमशः जो अत्यन्त प्राचीन मनुष्य रहे होंगे वे तो बहुतही शिल्पादि विद्या में अत्यन्त अकुशल केवल पशुओं के समान अपने व्यबहारों का निर्वाहकरते रहे होंगे इत्यादि सो यह बात सर्वथा असम्भव है क्योंकि वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों के देखनेसे यह बात स्थिर होतीहै कि पहिलेके भी लोग शिल्प आदि विद्यामें आजकल्ह के लोगों से किसी प्रकार कम कुशल नहीं थे क्योंकि पहिले तो यह बात विचारणीय है कि यद्यपि सभीसृष्टि ईश्वरेच्छाधीनहीं है तथापि लोग सृष्टि का दो प्रकार कहते हैं एक ईश्वर सृष्टि और दूसरी मनुष्य सृष्टिउनमें ईश्वर सृष्टिवह है कि जिसमें मनुष्यकी बुद्धि कुछ भी काम नहीं देती जैसे पृथ्वी पर्वत समुद्र आदि कीसृष्टि और मनुष्य सृष्टि उसे कहते हैं जो ईश्वर की कृपासेमनुष्य लोगअपनी बुद्धिद्वारा नाना विधपदार्थोंकी रचना करते हैं जैसे नहर तालाब पुल मकान आदिकोंकी सृष्टि तोजब पहिले सृष्टि उत्पन्न हुई होगी तोसिवाय पर्वत समुद्र आदिकों के और मनुष्य सृष्टि कोई भी न रही होगी तो अवश्य यह कहना पड़ेगा की यह जितने पदार्थ मकान कूप तालाब आदि अत्यन्त सरल रीतिसे मनुष्य लोग बनाय लेते हैं इन्हीं सब पदार्थों को प्राचीन लोग अत्यन्त श्रमसे बहुत दिनोंमे क्रमशः निकाला है क्योंकि छोटी भी बात जब तक मनुष्य को अज्ञात रहती है तब तक बहुतही कठिन मालूम पड़ती है और बड़ी भारी भी बात

जब मालूम पड़ जाती है तो सरलहो जाती है विचार करके यदि मनुष्य देखे तो कूप मकान आदिके बनाने का कारण जब तक लोगों को न मालूम रहा होगा तबतक कूप मकानआदि क्या पदार्थ है और इससे क्या आराम है और इसके बनानेका क्या उपाय है इत्यादि बातें वर्त्तमान समयके रेल तारआदि से किसी प्रकार कमती कठिन वा सुखद वा बुद्धिवैभव का सूचक न रही होगी हाँ जब क्रमशः ये बातें सरल हो गई तो इसके आगे इन्हीं बातोंको घटाय बढ़ायके थोड़ीसीभी बात निकालने को बड़ा भारी बुद्धिकौशल यदि आजकल के लोग कहें तो उस पर यही दृष्टान्त स्मरण आता है कि जैसे किसी के पूर्व पुरुषों ने कोटिशः द्रव्य एकट्ठा कर रखा है तो उसके लड़कों ने यदि उसी द्रव्य के द्वारा दश पांच हजार रुपया बढ़ाया तो वह उतनेके धनिक समझे जावेगें और जिसने केवल अपने पुरुषार्थ से कोटिशः द्रव्य पैदा किया वे उतनेही के धनिक गिने जावेंगे पर पुरुषार्थ अधिक उन्हीं का समझना चाहिये कि जिनने केवल अपने बुद्धि वैभवसे कोटिशः कमाया है हाँ इतनी बात अवश्य है कि जिन लड़कों ने अपने पूर्व पुरुष की कमाई भी नष्ट कर दियी उनसे वे लड़के अच्छेही गिने जाते हैं जिनने कि अपने पूर्व पुरुषोंकी कमाई को सुरक्षित रखा है वा थोड़ाभी बढ़ाया है सोएतद्विषयमे भी यदि प्राचीन ग्रंथ सभी प्रमाणिक मानेजावें तो बहुतसी पूर्व पुरुषों की कमाइयों को क्रमशः लोगोंने गंवाया है यहीस्थिर होता है क्योंकि वैद्यक के ग्रंथों के देखनेसे सोमलता आदिकोंका जो गुणमालूम पड़ता है सो अब कहीं सुनने में भी नहीं आता इसी प्रकार वैदिक मंत्र और पौराणिक तान्त्रिक वाक्यादिकों से यज्ञ अनुष्ठान मंत्र आदिकों की जो शक्ति मालूम होती

है उसका शलतमांश भी आज कल्ह कहीं देख सुन नहीं पड़ता तो अब पतद्विषय में सिवाय पुरानी पूँजी गवाँने के और क्या कहा जाय सकता है और यह सब पूँजी ऐसी नहीं थी कि वर्त्तमान समय के रेल तार आदि शिल्पों से किसी प्रकार कमती मनुष्यों का उपकार करती क्योंकि वे सब पुरानी पूँजियाँ वगैर कोइला पानी के स्वर्ग तक मनुष्यों को वहुत शीघ्र पहुचाती थी और बैठे वैठे मनुष्य सम्पूर्ण भूत भविष्यत का भी ज्ञाता हो जाता था रही यह बात कि इन सब बातों को मिथ्या कह देना सो तो कोई विशेष प्रमाणिक बात नहीं है कि जिसे कोई भी सत्पुरुष विश्वास करै क्योंकि अपनेही मनसे एकही ग्रंथके कुछ बातों को सत्य और कुछ बातोंको मिथ्या कह देना उचित नहीं और यह भी बात सर्व साधारण लोगोंको अवश्य माननीय है कि वेदसे प्राचीन प्रामाणिक ग्रंथ कोई भी नहीं है सो सभी मतमतान्तर के लोग भी मानतेही हैं तस्मात् यह अवश्य कथनीय है कि वहुत सी प्राचीन पूँजी हम लोगोंकी गलती से नष्ट हो गई है हाँजितने के विना जीवन निर्बाह भी नहीं हो सकता उतनी कथमपि प्राचीन चलीआतीहै तोउतनेहीमें घटायबढ़ायके चमत्कारदिखानेवाले उनलोगोंकेअपेक्षयातो अवश्यअधिकबुद्धिमान है किजिनको उठनेबैठनेभीनहींआता पर प्राचीनलोगोंपर उनबुद्धिमानोंका हस्तक्षेपकरना अधिक है औरनिष्फलभी है क्योंकिबड़ाईछोटाई अपनेसमानकालीन लोगोंसे विचारनेमेंतो कुछनफानुकसान भी है औरजोअतीतहोगये उनकेबड़ाईछोटाइयोंका विचार करनातो (काकस्यकतिबादन्ता) इसी दृष्टान्तके समानहोता है औरएकवात यहभीहैकि अपनेबड़ोंको अपनेसेछोटाकहना किसीकोभी इष्टनहींहोता क्योंकि अपने पूर्व पुरुषोंको निन्दा

होनेसेवही निन्दाक्रमशःअपने शिरपरभीआतीहै अतएवलोगोंकी यहीचाल प्रसिद्धचलरहीहै कियदिअपनेपूर्वपुरुषकमतीयोग्यताके भीहोतेहैंतोउनकोलोगबढ़ायकेकहतेवालिखतेहैंतोजोलोगअत्यन्त पूर्वपुरुषोंको वड़े प्रयत्नसे नानाविधयुक्तियोंको निकालके पशु-प्रायहीनबुद्धि ठहरावेंगे तो अवश्य उनको भी उस प्रयत्नका सिवायउन्हींके खानदानका एकतन्तुवननेके औरकुछभी फलनहीं दीखता क्योंकिजोवर्त्तमानसमयकेलोग परमप्राचीनपुरुषोंको शिल्पादिव्यवसायहीन स्थिरकरतेहैं उनमेंसेकिसीका ऐसाकथन नहींहै कि मेरेपूर्वपुरुषोंसे अन्यजातीय वाअन्यदेशीयके पूर्वपुरुषही शिल्पादिविहीनथे और मेरे पूर्वपुरुषतोमुझसेभी अधिक शिल्पादिसम्पन्नथे इत्यादि किन्तु उनकायहीकथनहै कि अवके लोगोंसे पूर्वकेलोग क्रमशःशिल्पादिहीनथे तोयहकथनतो केवल-स्वारूढ़शाखाका छेदनमालूमपड़ताहै अतएवएतद्विषयके खंडन मेंविशेषयुक्तियोंकी आवश्यकताभी नहींहै। अवप्राचीनवेद आदि-ग्रन्थों मेंभी व्योहारिकवातोंका निरूपणथा इसवातकी सर्वसा-धारणलोगोंपर सर्वसाधारणप्रतीति होनेकेलिये बहुतसीवैदिक-वाक्य दिखाईजातीहैं ऋग्वेदके तृतीयाष्टकके अष्टमअध्यायमें।

(शुनंवाहाः शुनंनरःशुनंकृषतुलांगलम्)

इसवाक्यसे खेतीकरनेकी कारीगरीवतायाहै तथाऋग्वेदके प्रथमाष्टकके द्वितीयाध्यायमें।

(स्योनापृथिविभवानृत्तरानिवेशनीयच्छानः शर्मसप्रथ)

इसवाक्यसे मकानवनानेआदिकी वातेंकहीहै तथाऋग्वेदके तृतीयाष्टकके षष्ठाध्यायमें।

(शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत दिवोदासायदाशुखे)

इसवाक्यसेपत्थरोंके महलवनगरआदिकीवातेंदिखाईहैं तथाकृष्णयजुर्वेदके चतुर्थकाण्डके पंचमाध्यायमें।

(इमारुद्रायतवसेकपर्दिने त्तयद्वीरायप्रभरामहे मतिमय्यथानःशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविसंपुष्टंग्रामेअस्मिन्ननातुरम्)

इसवाक्यसे ग्रामआदिके विषयकीबातें दिखाईहैं तथाऋग्वेदके प्रथमाष्टकके द्वितीयाध्यायमें ।

(तत्तन्नसत्याभ्यांपरिज्यानंसुखंरथं)

इसवाक्यसे रथआदिकेविषयकी बातेंदिखाईहैंऔरभीजुलाहेलुहारआदिके कारीगरीकीबहुतसीबातें दृष्टान्तरूपेण तत्तस्थलमें वैदिकवाक्यमेंदिखाईहैं एवंकृष्णयजुःसंहिताकेचतुर्थकाण्डके षष्ठप्रपाठकमें ।

(वाजश्चमेप्रसवश्चमे प्रयतिश्चमेप्रसृतिश्चमे)

इत्यादिवाक्योंमें सांसारिकव्यवहारोंपयोगी वहुतसीबातें दिखाईहैंतोइनसबपूर्वोक्तवाक्योंसे यहस्थिरहोताहै किजवसे ऋग्वेदादिग्रन्थहैं तभीसेवहसब खेतीरथआदिकी कारीगरीप्रसिद्धहै ऋग्वेदकेतृतीयाष्टकके षष्ठाध्यायमें

(भूयसावस्नमचरत्कनीयोऽविक्रीतोअकानिषम्पुनर्यंत सभूयसा कनीयोनारिरेचीद्दीनादत्ताविदुहन्ति प्रवाणम्)

इसवाक्यसेवाणिज्यव्यापारकी वहुतसीवातेंदिखाई हैं तथा ऋग्वेदके प्रथमाष्टकके द्वितीयाध्यायमें ।

वेदायोवीनापदमन्तरिक्षेणयततांवेदनावस्समुद्रियः

इसवाक्यसे जहाजकेविषयकीबातें दिखाई है तथा ऋग्वेदके अष्टमाष्टकके द्वितीयाध्यायमे

(सुत्रामाणंपृथिवीद्यामनेहसंसुशर्माणमदितिंसुप्रणीतिंदैवींनावंस्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहेमास्वस्तये)

इसवाक्यसेभी भारी भारी जहाजोंकीवातेंदिखाई हैं और भी संग्रामकेविषयकीवातेंभी तत्तद्वैदिकवाक्योंमें देखपड़ती हैं यथाऋग्वेदके पंचमाष्टकके प्रथमाध्यायमें ।

(जीमूतस्येवभवतिप्रतीकम् यद्वर्मीयातिसमदामुपस्थे अनाविद्धयातन्वाजयत्वंसत्वावर्मणोमहिमापिपर्तु)

इसवाक्यसे कवचआदिकी महिमादिखाईहै तथा ऋग्वेदके अष्टमाष्टकके पंचमाध्यायमे।

(अस्माकमिन्द्रःसमृतेषुध्वजेष्वस्माकंयाइषवस्ताजयन्तुअस्माकं वीराउत्तरेभवन्त्वस्माँउदेवाअवताहवेषु)

इसवाक्यमेध्वजापताका वाणयोद्धाआदि बहुतसी संग्रामोपयोगीचीजोंकीबातेंदिखाईहैं तथाऋग्वेदके चतुर्थाष्टकके प्रथमाध्यायके।

(केतेअग्नेरिपवेबन्धनासःकेपायवःसनिषन्तद्युमन्तःकेधासिमग्ने अनृतस्ययान्तिकआसतोवचसःसन्तिगोपाः)

इसवाक्यसे शत्रुओंकेपकड़नेवकैदकरनेकी बातेंदिखाईहैं तथाऋग्वेदके चतुर्थाष्टकके द्वितीयाध्यायमे

(नसराजाव्यथते यस्मिन्निन्द्रस्तीव्रंसोमंपिबति गोसखायमश्रास्त्वनैरजतिहन्तिवृत्रंक्षेतिक्षितीः सुभगोनाम पुष्यन्)

इसवाक्यसे शत्रुओंकेमारने वप्रजाओंकेप्रसन्नकरने वअपने ऐश्वर्यबढ़ाने आदिकीबातेंदिखाईहैं तथाकृष्णयजुःसंहिताके प्रथमकाण्डके द्वितीयप्रपाठकके नवमअनुवाकमे '(राजसूययज्ञका अंगभूतरत्निहोमनामककर्मकहाहै सोबारहदिनमें संपन्नहोताहै उसमेंप्रथमदिनमे यजमानब्राह्मणके घरपरजायकरके जाउरसे बृहस्पतिकाहोमकरताहै और जिसवृषभकेपीठपर सपेददाग होवे ऐसेवृषभकोदक्षिणारूपेणदेताहै औरद्वितीयदिनमेंक्षत्रियकेघरपर औरतृतीयदिनमेंमहिषी(पट्टरानी)केघरपरऔरचतुर्थदिनमेंबावाता(राजाकीप्रीतिपात्र राजपत्नी) केघरपर औरपञ्चमदिनमे परिवृक्ति(राजपत्नीतोहै परराजाकीप्रीतिपात्रनहीहै) उसकेघरपर छटवेंदिन सेनापतिकेघरपर सातवेंदिन सारथिकेघरपर आठवें

दिनअन्तःपुर(महल)के अध्यक्षकेघरपर औरनवमदिनमे ग्रामणी (जोकि रास्तेचलनेवालोंको डाकुओंसेबचाके एकग्रामसे दूसरेग्राममे पहुंचानेकेलिये राज्यसेनियुक्तहैं (चौकीदार) दशवेंदिन खजांचीकेघरपर औरग्यारहवेंदिन भागदुघ (तहसीलदार) के घरपर बारवेंदिनद्यूतकार (जूवाकीविद्याकोजाननेवाला) के घर परउक्तरीतिसेहोमआदि तत्तद्देवताओंकाहोताहै तोइनसबवाक्योंके देखनेसे यहमालूमहोताहैं किउससमयके आर्यलोग प्रजापालनकीरीति राज्यप्रबन्धकीरीति युद्धादिकाकौशल आदिमें अबसेज्यादाचतुरथे तोनिष्प्रमाण प्राचीनलोगोंको अनभिज्ञ कहना सर्वथाअनुचितहै इति।

अबइसबातका सभीमनुष्यको ध्यानरखना आवश्यकहैकि जितनाऐहिक वापारमार्थिककार्य वातत्तत्कार्यविषयक उद्योग है सभीशरीरीमूलकहीहै क्योंकि शरीरकेविना किसीकार्यकाउद्योगभी यदिनहीहोसकता तोफलसिद्धिहोनातो अत्यन्तदूरहै बहुत अनभिज्ञलोग इसबातको नख्यालकरके किसीकार्यमें इतने आसक्तहोजातेहैं किउनकोअपनेशरीरके आहारविहारादिका सर्वदाविस्मरण होजाताहै अर्थात् असमयपर प्रतिकूलादि आहारविहारादिभी करलेतेहैं तोवेजिसकार्यमेंआसक्तहैं उसकार्यकी सिद्धितोदूररही अपनेशरीरसेभी हाथधोते हैं १ और बहुतसे लोग इन्द्रियोंके परवशहोके इतनेभोगप्रवणहोते हैं कि वृद्धावस्थातक उनकीबुद्धिबालकसेभी छोटीहीरहती है अर्थात् खट्टेमीठे आदिपदार्थोंपर इतनेचंचलचित्त रहतेहैंकि उसके रसबीर्यबिपाकादिको नदेखके केवलक्षणिक जिव्हास्वादहीसे बस्तुओंको हिताहितसमझके उनचीजोंको पेटमें भरना शुरु करते हैं २ बहुतसेलोग वैद्यकशास्त्रके भरोसेनिश्चिन्तरहते हैं अर्थात् समझतेहैंकिसबरोगोंकी उत्तमोत्तमदवातो सर्वत्रसुलभहै

तोयथेष्ट आहारविहार करनेमेंक्याडरहै क्योंकि जबरोगहोगा तबऔषधसे उसेदबावदेंगे इत्यादि ३ बहुतसेलोग जिसपदार्थके उपभोगसे रोगादिहुआ है औरबड़ेभारीयत्नसे किसीप्रकारवह रोगादिहटाहै तोफेरभी उसीप्रतिकूलवस्तुका संग्रह इसहोसा ज्ञासीसे करतेहैंकि थोड़ासा संग्रह करनेसे कदाचितवहरोगादि नहींहोगा इत्यादि ४ बहुतसेलोग वैद्य कके इतस्ततःके दोचारग्रंथों कोदेखसुनकेयह निश्चयकरलेतेहैं किव्याधिनानाप्रकारकी हैतोजो व्याधिअपथ्यसेहुईहैं उनकातोपथ्यसेवनादिसेपूतीकारहोसकेगा औरजोव्याधिकर्मज(प्रारब्धसे उत्पन्न) हैंउनकापूतीकार पथ्यसे-वनादिसे नहींहोसकता इत्यादिसमझके यथेष्ट आहारादि करतेहैं ५ औरबहुतसेलोगतो अज्ञानसे प्रतिकूल आहारादि करते हैं ६ औरबहुतसेलोग परवशतासे वाअसामर्थ्यसे प्रति-कूलआहारादि करते हैं इत्यादि नानाविधकारण प्रतिकूल-आहारविहारादिकहैं सोसभीशरीरके बाधकहोतेहैं अतएव बुद्धिमानकोउचितहै कि सबकेपहिले प्रतिकूलआहारादिको दूरकरकेवअनुकूलआहारादिके सेवनसेशरीरको कार्यक्षम व स बलरखें किजिससेलौकिक वपारमार्थिक मोक्षपर्यन्त सभीकार्य निर्विघ्नसिद्धहोसकेंगे क्योंकि इसीअस्थिमांसादिमय स्थूल-शरीरके अनुकूलही मनोबुद्ध्यादिमय सूक्ष्मशरीरभीहै क्योंकि यहबात सभीको प्रत्यक्षसिद्धहै कि जबकोई मादकद्रव्य स्थूल-शरीरमें खायांजाताहै वाकोईतरहका भारीज्वरादि स्थूलशरीरमें होताहै तो उससमय मनुष्यकीबुद्धि यथार्थकाम नहींदेसकती इतनाहीनहींकिन्तुमोह (बेहोशी) होजातीहै तोसर्वथा इसी स्थूलशरीरके आधीन सूक्ष्मशरीरभी अवश्यमाननीयहै और उसीसूक्ष्मशरीरकेआधीन ध्यानधारणासमाधिआदि सभीसाधन हैंअतएव भगवानपतञ्जलिने स्थूलशरीरके स्वस्थताकेलिये

वैद्यकशास्त्र औरसूक्ष्मशरीरकी स्वच्छताकेलिये योगशास्त्र इन-
दोनोंका तुल्यआदर कियावल्कि स्थूलशरीरकेसाधनका बहुतबृ-
हत्ग्रन्थबनाया औरयोगसूत्र अत्यन्त स्वल्पबनायातो उसकाभी
यहीअभिप्रायमालूमपड़ताहैकिस्थूलशरीरके शोधनवस्वस्थतासे
प्रायःसूक्ष्मशरीरभी परिस्कृतहोहीजाताहै हाँकेवलउसमें बिशेषअ-
तिशय संपादनमात्रबाकीरहताहैतो उसीकेलियेयोगाभ्यासहैंऔर
जोपीछेअनेकतरहकेप्रतिकूलअहारादिकरनेवाले दिखायेहैंउनमेंसे
प्रथमश्रेणीके लोगोंकोतोइतनाही विचारणीयहै कि जिसकार्यकी
सिद्धिचिरकालमें होनेवालीहैं उसमेंयदिमनुष्य कितनाभीव्यग्रहो
तोक्याहोसकताहैजैसेदस दिनके रास्तेसेजोस्थानप्राप्यहैंवहकित
नाभी दौड़कर यदिमनुष्यचलेगातो नहीं पहुंचेगा इतनाही नहीं
किन्तु थककेगिरभीपड़ेगा औरजोविचारपूर्वक शनैःशनैः चलेगा
वहदशनहींतो बारहदिनमें अवश्यपहुंचेगा इसीपर यहभीविचा-
रनाचाहिये किमनुष्यआदिके अन्तःकरणआदिका बलजोनियतहै
उसकाखर्चभी बहुतहिसाबसेकरनाचाहिये क्योंकिजब बहस
बवल थोड़ेहीदिनमें थोड़ेहीकार्यकेलिये खर्चकरदियाजायगा
तोआगेकेलियेजीवनकीभीपूंजी कहांसेरहेगी इसकादृष्टान्तयहहै
कि जैसेकिसीदीवामें पावभरतैलहै तोउसमेंयदि पतलीवत्ती
लगायके औरउसकेपाससे स्थूलाक्षरकेपुस्तकादि देखेजायँतो
वहतैल दो चारदिनतक कामदेसकताहै औरयदि बड़ीमोटी
बत्तीलगायके बहुतदूरसे अतिसूक्ष्माक्षरआदि देखेजायंतो घण्टे
हीदोघण्टेमें वहतैल खतमहोसकताहै इत्यादि । औरद्वितीयअ-
धिकारियोंको यहबिचारणीयहै कि जितनी सांसारिकचीजें हैं
सभीकाआहारादि मनुष्यहिसाबसे करसकताहै परयदि उलटा
पलटाकरेगा तोअवश्यधोखा उठावेगा जैसेरातकोदहीखाना
तथामध्यान्ह ग्रीष्मऋतुमें गरमदूधपीना प्रायःप्रतिकूलहोगा

औरवहीगरमदूध हेमन्तादिऋतुकेरात्रिमें औरवहीदधि ग्रीष्म ऋतुकेमध्यान्हमें प्रतिकूल नहींहोगा इसीप्रकार वस्तुओंके संयोग आदिसे भीवस्तुओंका गुणदुर्गण बदलजाताहै जैसेकेवलदधि सर्वथाअहितहै और लवणजलजीराआदिके संयोगसे तक्रादि हितहै तोइसीप्रकार जितनेछौंकबघारआदि प्रचलितहैं वेसब प्रकृतिकेअनुसार वसमयानुसारवबस्तुओंके संयोगाद्यनुसार हितअहित करतेहैं जैसेग्रीष्मऋतुमें औरपित्तप्रकृतिवालेको और आलूआदि उष्णवीर्यवस्तुओंमेंहींग लवङ्गआदिका बघारअ-हितहोगा औरउसीसमयादिकमें जीरेकाबघार हितहोगा और स्वादभी सबतरहसे संपादनहोसकताहै तोमनुष्यको यहीसब बात प्रतिदिन प्रतिक्षण विचारके अपनेइच्छानुरूप स्वादकी पूर्णताभी करनीचाहिये क्योंकि शरीरकीस्थिति प्रतिक्षण बदलती रहतीहै तोइसमें जिसीक्षणनजरचूकेगी उसीक्षण धोखा होनेका सम्भवहै इसकादृष्टान्त यहहैकि जैसे बहुतछोटीनाव-बड़ेभारीपालपर वेगसे चलीजातीहै तोउसपालकीडोरी पकड़ नेवालेकी दृष्टिसर्वदा उसवायुवेग व पालकीतरफ रहतीहै और जिसीसमय दृष्टिचूकतीहै उसीवख्तनौका उलटजातीहै इसी प्रकार शरीरपरभी सर्वदादृष्टि रखनीचाहिये औरतदनुसारेणैव स्वादकीभी पूर्णताकरनी चाहिये २ तृतीय अधिकारियोंको को यहविचारणीयहै कि जितनावैद्यकशास्त्रहै सोपहिलेहीसे रोगोंसेबचनेकेलियेहै नकि रोगोंकेउत्पन्न करनेकेलियेहैजैसाक्षुधा रूप रोगकेलिये अन्नादिभोजन पिपासारूपकेलिये जलादि पान रूपऔषध उसीसमयमनुष्यको करनाचाहिये कि जबतक क्षुधा पिपासाआदिसे कोईविकारान्तर नहींउत्पन्नहुआहै और क्षुधा पिपासा तोहै क्योंकि जबतकक्षुधादिक नहींहै तबतकभी अन्ना-दिअहितहोगा और जबक्षुधादिजनित ज्वरादि उत्पन्नहोजायंगे

तबतो अत्यन्तहीअहितहोगा इसीप्रकार सभीचिकित्साशास्त्र कोलगानाचाहिये क्योंकि सांख्यशास्त्रमेंभी इसीचिकित्साशास्त्र का दृष्टान्तदेके यहस्थिरक्रियाहैकि जोअनागत (भावी) दुःख हैं उसीकादूररखना सांख्यशास्त्रका मुख्यप्रयोजनहै क्योंकि भूतवर्त्तमानदुःखको सांख्यशास्त्र कभीदूर नहींकरसकताइसी तरह चिकित्साशास्त्रभी अनागत रोगोंकेहटानेहीकेलिये है क्योंकि जोरोग उत्पन्नहोचुके उनकोकैसे हटायसकेगा अबयदि इसपरयहशंकाकोईकरेकि ज्वरादिउत्पन्नहोनेपर जोऔषधादि सेवनक्रियाजाताहै उसका क्याअभिप्रायहै तोउसकाउत्तरयहीहै कि जबकिसीप्रतिकूल आहारादिसे नाड़ियोंकाचक्र उलटपलटहो जाताहै तोयदि अनुकूलआहारादिभी कियेजावेंतोभीवहप्रति-कूलही फलदेतेहैं क्योंकि जबतक नाड़ीचक्र फेरदुरुस्तनहोंगी तबतकउसका विपरीतहीफलहोगा जैसे मनुष्यमात्रकेलिये दुग्ध अत्यन्तहितहैपरन्तुज्वरादिमें अत्यन्तअहितभीहैकोईदुग्धकेविषय में ऐसाभीकहतेहैं कि यहदुग्ध स्वतन्त्रकार्यकारकनहींहै किन्तु योगबाही अर्थात् किसीका सहायकमात्रहै जैसेअंजनस्वतन्त्र कार्यकर्त्तानहींहै किन्तु शक्तपदार्थहै तोजिसीसे कपड़ाबिनने मट्टीखोदने जलखींचने आदिमें लगायदिया जाताहै उसीकार्य की सहायताकरताहै इसीतरहयहदुग्धभी जबशरीरके नाड़ीचक्र अनुकूल चलतेरहतेहैं उससमय लेनेसे अनुकूलतामें सहायता करताहै औरजबशरीरके नाड़ीचक्र प्रतिकूल रहतेहैं तोयहदुग्ध भी प्रतिकूलताहीको बढ़ाताहै अतएव फोड़ाफुनसीआदि कि सीप्रकारकेरोगमें इसकालेना सर्वथाअहितहै और अत्यन्तस्व-स्थशरीरमें इसकालेना सर्वथाहितहै फलितार्थयहीहुआ किकफ पित्तादिकीमात्रा जिसप्रकारसे जिसशरीरमें जितनीअपेक्षितहैं उतनी उसप्रकारसे जबतकबनीहै तभीतकसब अनुकूलाद्याहा-

रादि शुभफलदायक होतेहैं औरजबईषत्‌भी इनमेंव्यतिक्रम हुआ तो वहीअनुकूलाद्याहारादि बराबर विपरीतहीफलको देतेहैं इसमेंभी वहीपूर्वोक्त लघुनौकाका दृष्टान्तघटायलेना चाहिये क्योंकि जबतकपालकीडोरी दुरुस्तरहतीहै तब तकवही वायुवेग उसनौकाके चलनेका सहायक होताहै और जबवहडोरी ईषत्‌भी टेढ़ीमेढ़ीहोगई तोवहीवायुवेग उसनौकाके उलटदेनेका सहायकहोताहै तोउसऔसरमें उसडोरी वापालआदिका गिरा देना वाकाटदेनाआदि जैसेहितकारी होताहै इसीप्रकार मनुष्य को रोगाद्यवस्थामें उपोषणविरेचन वमनआदि हितकारीहोतेहैं तो इन्हींसब विगड़ेहुये नाड़ीचक्र वकफवातपित्तके दबानेव भस्मकरनेवशोषणकरने आदिकेलिये नानाविध चिकित्साशास्त्र बनाहै जिसेकि सद्वैद्यलोग बड़ेयत्नसे काममेलातेहै तोसारांश यहीहुआ कि जोविकारउत्पन्नहोचुकेहैं उनकीशान्ति तोकालक्रम मेंणैव होगी परआगेके तरंगायमाणविकार परम्पराके रोकने हीकेलिये नानाविध औषधादिकासेवन रोगादिउत्पन्न होनेपर कियाजाताहै। अबइसचिकित्साके भी अनेकप्रकारफैलेहैं अर्थात् एकतोप्राचीन चरकसुश्रुतादि प्रदर्शितरीतिजिसे कि वैद्यलोग करतेहैं दूसरी मुसलमानोंकेवख्तसे जो प्रारम्भहुईजिसेकीहकीम लोगकरतेहैं तीसरी अंगरेजोंकेवख्तसे प्रारम्भहुई जोकिदिनदिन डाक्टरखानेआदिमें बढ़तीहीजातीहैं तोयद्यपि इनतीनोंसेभी नफानुकसान दोखपड़ताहै परन्तु जिसजिसदेशके जलवायुके अनुकूल तथा मनुष्योंके प्रकृतिके अनुकूल जोचिकित्साग्रन्थ बनेहैं वेहीअधिक उपकारक तत्तत्स्थान वतत्तन्मनुष्योंकेलिये होंगे तोभारतवर्षीय मनुष्योंकेलिये जैसाप्राचीन चरकादि ग्रंथोक्त चिकित्सा उपकारणीहोगी तैसी देशान्तरीयचिकित्सा उपकारिणीकभीनहोगी यद्यपि इसवातपरहकीमलोग एककिस्सा

कहतेहैं कि किसीमहाराजने दोमट्टीकेघड़े तैलसेभरेहुये मंगाय के एकहकीमको औरएकवैद्यकोदिया औरकहाकि इसेआपलोग साफकीजियेतोहकीमने उसीवक्तकहाकि एकसप्ताहमेंमैं इसे साफकरकेदूँगा औरवैद्यनेकहाकि आठपहरमेंमैं इसेसाफकर दूँगा जबदोनोंसाफकरकेलेगये तोमहाराजने पूछाकिआपलोगों नेकिसचालसेसाफकिया तोवैद्यनेकहाकिमैंनेइसेगोमयकीअग्निमें फूककेसाफकिया हकीमनेकहाकि मैंनेकराहमें अत्युष्णजलसेधो धोकेइसेसातदिनमेंसाफकिया तोमहाराजनेकहाकि जोकामवैद्यनेवै एकदिनमेंकिया उसीकामको आपनेसातदिनमेंकियाइसकाक्या तात्पर्यहै तोहकीमने उत्तरदियाकि वैद्यकीरीतिमेंघड़ाफूटनेकाभी संभवहैऔरमेरीरीतिमेंदेरीतोलगीपरफूटनेका संभवनहींहैइत्या- दितोयहकिस्साजोआधुनिक वैद्यकरीतिहैजोकि थोड़ेदिनसेप्रच- लितहुईहैजिसमेंकिपारारांगाआदिरसौषध प्रधानहैउसपरतोघ- टसकताहै.क्योंकिरसौषधकीमात्रा बहुततीक्ष्णहोतीहै औरजोकि प्राचीनआर्षग्रन्थमें कहीहुईकाष्ठौषधिहै उनमेंयहकिस्सानहींघट- ताक्योंकि उनकाभीप्रकार हकीमोंकेप्रकारसे बिलकुलमिलताहै हाँ इतनीबाततो हकीमोंमेंअधिकदेखपड़तीहै कि अमीरोंको बीमारीमेंभी रिझाना जैसावेजानतेहैं वैसावैद्योंसे कदाचित्भी नहींबनता क्योंकि अमीरोंकीइच्छाको पूर्णकरते करते और चिकित्साकरना वैद्योंकाकामनहींहै किन्तु हकीमोंहींकाकामहै जैसेकिसी अमीरको खाँसीवाज्वरमें दधिघृतादि खानेकी यदि इच्छाहुईतो हकीमलोग उसखाँसीज्वरकानुसखा गौकोदेके उसकेदूधकादधिघृतादि रोगींकोखिलायके राजीरखेंगे औरवैद्य उसअवस्थामें दधिघृतादि सहसानहींदेवेंगे सोयहबातचिकि- त्साशास्त्रके अत्यन्तविरुद्धहै क्योंकि चिकित्साशास्त्रको रोगीके इच्छाकेअनुसार चलानाउचितनहींहै किन्तु रोगीकीइच्छाहीको

चिकित्साशास्त्रानुसार दवादेनारोगीकेलिये परिणाममेंसुखद-होताहै और गौआदिकोंको ज्वरादिकानुसखादेनेसे यद्यपिदधि-आदिका कुछगुणन्रदलजावे परअवश्यवह दधिआदि कुछपूति-कूलकरेहीगा औरयोंतोवहुतसे आजकलकेकमाऊवैद्यभी ज्वर औरअतीसारआदिमें यथेष्टदुग्धादि रोगीकोखिलापिलाके और इतस्ततः की वातोंकीनोकझोकमें रोगीकेचित्तको फुलाके और विषादिकीमात्रादेके दोचाररोज अपनाचमत्कार दिखाके जो कुछलेतेबनताहै सोअमीररोगियोंसे लेनिकलतेहैं परपरिणाममें यहसबवातें कभींरोगीकेलिये हितकारीनहींहोंगी किन्तुजिसरोग काजैसा पथ्यादिसेवन प्राचीनग्रंथोक्त है वहीरोगको जड़से हटावेगा क्योंकि मीठाऔरहितकारी दोनों अत्यन्तदुर्लभहै तो इससेभी यहीसिद्धहोताहै कि चिरायतावगुडूची वपिप्पली आदिसे जैसाज्वरहटसकताहै वैसामुलहठीवगुलकंद वशरबत अनारआदिसे कभीनहींहटसकता तोइसबातपर सभीवुद्धि-मानोंको विश्वासवध्यान रखनाचाहिये किप्राचीनचरकायुक्त चिकित्साभारतवर्षीय मनुष्योंको परमहितहै औरहकीम वा डाकृर वाआधुनिकरसादिदेनेवाले वैद्योंकीचिकित्सा वैसीहित-नहींहै इतनाहीनहीं बल्किपरिणाममें दुःखदहै हाँ इतनीवात-डांकृरोंमें विशेषहैकि जोपूाचीनग्रन्थोंमें शल्यविद्या (चीरफार) कापूकारलिखाहै वहक्रमशः एतद्देशीयवैद्योंने घृणासे इतना कमकरदियाकि क्रमशःउसकी विद्याहीजातीरही औरडाक्टर-लोगोंमें उसकापूकार दिनदिनतेजीपरहै अतएवतद्विषयमें उनकी रीतिस्वीकारकरना सभीकोउचितहीहै सोलोकपूसिद्ध-हीहै लोगकहतेहैं औरग्रन्थोंमेंभीलिखाहै किजबधन्वंतरि समुद्रमेंसे निकलेतो एकहाथमें जलौका (जोंक) और दूसरेहाथमें हरीतकी (हर्रय) लियेथे तोउसकातात्पर्ययहीहै किरोगमलविकार

वारुधिरविकारसे होताहै तो संपूर्णरुधिरविकारोंको जलौंका वसंपूर्णमलविकारोंको हरीतकी दूरकरतीहै परयहवात यद्यपि सत्यहै तथापिऔरभीचिकित्साकेप्रकार समयसमयपर आवश्यकहीहैं क्योंकि यदिआवश्यकनहोते तोवेहीधनवन्तरि आदिमहर्षिलोग उनप्रकाराका उपदेशक्योंकरते अवकिनरोगोंमेंक्याहितहैवाक्याअहितहैयहवातवड़ेविस्तृतचरकादिग्रंथोंमेंस विस्तर लिखीहैंअतएवउनकेलिखनेकी यहांपरआवश्यकता नहींहैं परजो लोगउनग्रंथोंकासंपादननहींकरसकते वाउनग्रन्थोंको समझनहीं सकते उनलोगोंकेलिये जयपूरकावनाभया अमृतसागरनामक भाषाकाग्रन्थवहुतहीउत्तमहै क्योंकिइसमें सवतरहकी चिकित्साकीरीति दिखाईहै यद्यपि आधुनिकवैद्यलोग इसग्रन्थकी निन्दाकरतेहैं परउनको निन्दाकरनेका केवलइतनाही अभिप्रायमालूमपड़ताहै कि यदिइसग्रन्थपरलोग श्रद्धाकरेंगे तो वैद्योंकी जीविकाकमती होजायगी क्योंकि भाषावद्ध इसग्रन्थसेसभी युक्ताहारविहार होसकतेहैं अतएव स्वयंरातदिन इसीकोदेखके अपनीचिकित्सकताभी फैलातेहैं औरवह्लपर इसीकीनिन्दाभी करतेहैं औरयथार्थ विचारनेमें यहग्रन्थअत्यन्त प्रामाणिक वड़े परिश्रमसे संगृहीतहुआहै हांइतनीवाततो इसमेंभीहै किवहुतसी आधुनिकरसौषधियोंका विनियोग तत्तद्रोगोंपर कियाहै उसका आशय इतनाही मालूमपड़ताहैं कि नवीनलोगोंकीश्रद्धा विनारसौषधिके नहीं होगी इसीसे वहसवभी इसग्रन्थमेंदिखायाहै परजिनलोगोंकी श्रद्धाप्राचीनकाष्ठौषधियोंहीपरहै वेलोग इसीग्रन्थसे उनकाष्ठौषधियोंहीको चुनकेअपनेकाममें लायसकतेहैं तस्मात्यहग्रन्थ अत्यन्तउत्तमहै औरभारतवर्षीय लोगोंकापरम उपकारीहै औरसंग्रहभी इसमेंवहुतग्रन्थोंकाहै अतएवसवको इसग्रन्थका अवलोकनकरना वध्यानरखना शरीरकेविषयमें नीरोगताका संपादकववलवुद्धिवर्द्धकहोगा। ३

चतुर्थश्रेणीकेलोगोंको तो इतनाहीविचारणीयहै कि पथ्यसे वनकेवल रोगावस्थाहीमें नहींहै किन्तुसर्वथानिरोगावस्थामेंभी पथ्यसेवनसे नीरोगताकीरक्षा बलबुद्धिकीवृद्धिहोतीहै और-जोरोग एकदोवारउत्पन्नहोचुका उससेतो सदाहीसावधान-रहनाचाहिये क्योंकि प्रथमतोयहशरीरही रोगमयहै अर्थात् क्षुधातृषा मलमूत्रादिवेग आदिप्रतिदिन प्रतिक्षणइसमेंलगाहीहै फेरजराभी बातपित्तादिका वैषम्यहोनेसे भारीउपद्रवसिरपर आहीजाताहै तो इसकेविषयमें थोड़ीभीअसावधानता शरीर-नाशतककरतीहै औरजोरोग उत्पन्नहोचुकेहैं उनकासमूलनाश-होना बहुतहीकठिनहै क्योंकि सूक्ष्मरूपेण उनकेविकारशरीरमें वनेहीरहतेहैं हाँयदि बहुतपथ्यसेवन वऔषधादिसेवनसे कुछव-हदबताहै तोभी ईषत्भी अपथ्यहोनेसे तुरन्तही वहफेरउभड़-जाताहै सोयहबात सभीको अनुभूतिहोगी कि जिसकोकहींहड्डी-आदिमेंचोटेलगीहोगी उसकीवेदनाजावज्ञीपूर्वा वायुचलनेसे उभड़ेगी वाजिसकोकभी नेत्ररोगहुआहोगा सोरात्रकोसूक्ष्माक्षर-आदिदेखनेकाजभीपरिश्रमकरेगातभीनेत्रमें विकारपैदाहोगाऔर इसअपथ्यकाकहींतोशीघ्रऔरकहींवहुतचिरकाल (दशवीसवरस-में) फलहोता है क्योंकि जोजिसकानियत आहार है उससेएक ग्रासभी न्यूनाधिकहोने वाअन्यथाहोनेसे अथवाजोजिसकाविहारहै उससेएकपदभी अन्यथाहोनेसे अवश्यकुछनकुछ विकार शरीरमें होनान्यायप्राप्तहै तोवहकैसे टलसकताहै रहीयहबातकि इनबातोंपर बहुतकमलोग ध्यानदेतेहैं औरवहुतसेलोग यहभी कहतेहैं कि नीरोग शरीरमें रोगीवनना उचितनहीं इत्यादि तो उनकाइतनाहीउत्तर परिपूर्णहैकि बहुतकमलोग ऐसेहैं जोकि सर्वदानीरोग वपूर्णायु वकार्यक्षमरहैं क्योंकि औचिकित्साशास्त्रमें नीरोगताआदिके कार्यकारणभाव युक्ताहारविहारत्वादि दिखाये

हैं वेकभीअन्यथा नहींहोसकते क्योंकि यहबातअत्यन्त प्रसिद्धहै (वैद्यानांशारदीमाता पिताचकुसुमाकरः) जबशरद्वसन्तआताहै तो अवश्यअधिकलोग रोगीहोतेहैं वजबग्रीष्मआताहै तबबहुत सेलोग फसली (हैजा) कीबीमारीमें मरजातेहै औरबड़ेबड़ेवैद्यों कोभी इसकानिदान (कारण) नहींमालूमपड़ताहै तोअवश्यउस जगह यहीसमझनाचाहियेकि क्रमशःक्रमशः थोड़ाथोड़ा जोपूर्व कालकासंचितअपथ्यहै वहीएकवारगीप्रकुपितहोके अतिशीघ्र विसूचिकादिद्वारा शरीरकोअतिशीघ्रनष्टकरदेताहै अतएव मनुष्यमात्रको उचितहैकि अपनेशरीरका आहारदिविहार ठीक करके रत्तीभरभी कभीअन्यथानहोनेदेवैं क्योंकिजैसे अतिलघु वंगमृगांकआदि फायदाकरतेहैं उसीप्रकार राईमरचा दही अमिलीआदि थोड़ीभीयदि उदरमेंजावेगीतोअवश्यअपना दुर्गुणकरे हीगीअवरहावहदुर्गुणचाहेक्रमशः खाँसीआदिरूपेणथोड़ेहीदिन मेंपरिपंक्वहोवेवाइकट्ठाहोकेविसूचिकादिरूपेण चिरकालमें एक दमशरीरकोउलटे और यह बातहै कि जितनेरोगहैं सभीआयुबलबुद्धिआदिपर ऐसाआघातपहुंचातेहैं कि कुछनकुछउनमें कमतीकरीडालतेहैं अतएव वहप्रसिद्ध है ।

(वागभटस्यप्रतिज्ञेयं दीर्घरोगीनजीवति)

इसकादृष्टान्तयहहैकि कैसीभीमजबूत लकड़ीहो यदिवह अग्निसे कुछजलगई बादउसको लोगोंने जलादिसेकुछबचाया तोभी उसकाउतना अंशकभी नहींबाकीरहसकता जितनाकि पहिलेथा औरयदि कहीं दोचारबारजली तबतोबहुतहीकम उसका अंश बाकी रहेगा इसीतरह रोगदग्धशरीरके बलआदि भी क्रमशः घटतेहीहैं अतएवमनुष्यको रोगसे वतत्कारणीभूत अपथ्यलेशसे सर्वदादूररहनाचाहिये । ४

पंचमश्रेणीकेलोगोंको यहविचारणीयहै कि प्रारब्धवही

पदार्थहै कि जोपूर्वजन्मादिमें कृतकर्मपरिपक्वहोके फलोन्मुख हुयेहैं क्योंकि अधर्मकेविषयमें सबस्मृतिकारोंने ऐसाहीस्थिर कियाहै औरअधर्म और अपथ्यकी तुल्यरीतिसर्व लोकशास्त्र प्रसिद्धहैंतोयदिपूर्वजन्मकृतअधर्मकेप्रायश्चित्तादिकर्मविपाकादि ग्रन्थसे सदाचारपरंपराप्राप्तहैं औरवेप्रायश्चितपूर्वजन्मकृत-पातककोभी नष्टकरतेहैं तोअवश्यपूर्वजन्मकृत अपथ्यादि संचय जनितकर्मजव्याध्यादिभी प्राकृतिक पथ्यसेवनापेक्षया अतिमात्र या पथ्वसेवनसे क्योंनहट सकेंगी क्योंकि यदिनिरोगताकाका-रणपथ्यसेवनलोकशास्त्रसिद्ध है तो अवश्यजितनीही उसकी तारतम्यहोगी उतनीही अपनेकार्यके तारतमम्यकोभी दर्सावेगी अबरहीयहबात कि उसकातारतम्यका ठीकठीकपरिज्ञान कैसे होसकताहै तो एतद्विषयमें तो यहीकथनहै कि जिसीविषयको जितनाहीअधिक मनुष्यविचारेगा उतनाहीअधिकउसकापुरजा उसकेहाथलगेगा तो एतद्विषयमें बिचारनेकीरीति यहीहै कि प्रतिदिनक्षुधातृषाआदिका वेग व मलमूत्रादिका वेगशरीरमेंकैसा है इसबातकोमनुष्य रोजख्यालकरतारहे जिसीदिनजिसीक्षण उसमेंईषत्भीव्यत्ययहोवे उसीवक्तउसव्यत्ययके हटानेके प्रयत्न में ईषतभी आलस्य वाउपेक्षाआदि न करे तो जोपुरुषएवंक्रमेण सदासावधानरहे अवश्यउसको अपनेशरीरका तथादूसरेके शरीरका अनुकूल प्रतिकूलाहारविहारादि कापरिज्ञान ठीकठीक कुछकालमें होहीगा। ५

छठवें श्रेणीकेलोगोंको यहीहितकारीहोगा कि किसीप्रकारसे शारीरकविषयक कुछज्ञान अवश्यसंपादनकरेक्योंकि वेगैरइसके कोईभीव्यापारनहींहोसकता बहुतसेलोग विज्ञयान्तरमें बहुत-ज्ञानसंपादनकरतेहैं परशारीरकविषयमें सर्वथाअनभिज्ञरहतेहैं तो यहबातबहुतहीअनुचित मालूमपड़तीहै क्योंकिसभीज्ञान

कलाकौशलादि स्थूलशरीरहीपर ठहरसकताहै औरस्थूलशरीर की यथार्थस्थिति बिनाशारीरकके जाने चाहियेकियतकाल घुणाक्षरन्यायेनहोवे तथापि उसशरीरस्थितिके भरोसे कोईभीकाम नहींहोसकता क्योंकि जोपदार्थआकस्मिकहैं उसकाक्याभरोसा अतएवसबकोउचितहैकि विषयान्तरके अज्ञानकोयदिनभीदूर करसकेतो एतद्विषयक अज्ञानकोतो अधिकनहीं तो जितनेसे अपनेशरीरकी नीरोगतादिस्थिररहे उतनातो अवश्यज्ञानसंपादनकरे ६ ।

सप्तमश्रेणीकेलोगोंको यहबिचारणीयहै कि जितनीपरवशता आदि मनुष्यकोकृतिहैं सबकाकारणशरीरहै है औरउसकेधनादिलाभरूप जोफलहैं उसकाउपभोगभी पुत्रकलत्रादिद्वारा परम्परयाहोगा अपनेस्थूलशरीर वतदुपहितअंतःकरणद्वारा साक्षात् होगातो साक्षात् उपभोगसाधन जोशरीरादिहैं उसकीउपेक्षाकरनेसे उसपरवशताआदिका फलभीठीकठीक कैसेहोसकताहै अब रहीअसामर्थ्य तो उसमेंयहबिचारणीय हैं कि जोहीकाम नितान्तदरिद्र करसकताहै वहीअत्यन्त धनिकभीकरसकता है हांइतनाअवश्य फ़रकहोगाकि धनिकज्वरादिरोगमें बहुतसाद्रव्यव्ययकरके तोसन्तुष्ट होगा औरदरिद्रधनियां नीवकीछालगुडूचीआदि सेवनसे सन्तुष्टहोके अपनेनरुज्यको संपादनकरेगा बहुतसेलोग इसविषयमेंआश्चर्यमानेगे किजो नीरोगतादि बहुमूल्य मृगांकआदिमात्राओंसे होसकेगा सोअत्यन्त तुच्छनिरुवकाथादिसे कैसेहोगा इत्यादि परजोलोग आर्षग्रन्थोंकोदेखेसुनेहैंउनको एतद्विषयमें कभीआश्चर्यनहींहोगा क्योंकि उनग्रन्थोंमें बहुमूल्य मात्रा कहींभीनमिलेगी किन्तु वहीगुडूचीआदि वन्योषधि लिखीहैं अबउन्हींवन्योषधियोंके संपादनहींमे यदिकिसीको बड़ा प्रयत्नहोवे वबहुतद्रव्यव्ययहोवे तो इसकीतोकथाहीन्यारीहै पर

ऐसीजें बहुमूल्य नहीं है और वस्तुओं का गुण दुर्गुण भी मूल्यपर-त्वेन नहीं स्थिर है किन्तु वस्तुओं ही पर स्थिर है क्योंकि यही-पिप्पली तीनदिन गोमूत्र में भिगोके चौसठ पहर खरल किई जावे तो बसन्तमालती से बढ़के फायदा करती है यहबात अनुभूत वअत्यन्त प्रामाणिक है एवंसहदेवी की लता यदि शिर में बांध दी जावे तो कैसा भीज्वर हो तत्काल छूट जाता है ।

कचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्प्रभावतः । ज्वरं हन्ति शिरोबद्धा सहदेवीजटा यथा ।

अब यह बात तो लाचारी की है कि सहदेवी मिलती ही नहीं वा उसका स्वरूप परिचय ही क्रमशः लुप्त हो गया है पर ग्रंथों मे उसका गुण ऐसा ही लिखा है और वस्तुओं का अल्पमूल्यत्व वा बहुमूल्यत्व यदि गुणों की तारतम्य पर होवे तो छोटी और बड़ी लायचियों के गुण में बहुत ही कम फरक है पर मूल्य में बहुत फरक है तो इसका कारण गुणों का तारतम्य नहीं है किन्तु जो चीज जहां ज्यादा मिलती है वहीं वहां सस्ती होती है और जो चीज जहां कमती होती है वहीं वहां महँगी मि-लती है यह बात सबको माननीय है क्योंकि काबुल आदि में दाखसे व आदि कलकत्ते आदि में डाभ केला आदि काशी आदि में कागजी नी-बू अमरूद आदि सस्ते मिलते हैं और यही सब चीजें देशान्तर में महर्घ मिलती है तो इसका यह अभिप्राय कोई भी नहीं कह सकता कि वही चीजें काबुल आदि में कम फायदा करती हैं और देशान्तर में अधिक फायदा करती हैं इत्यादि किन्तु यही कहना होगा कि जहां जो चीज ज्यादा मिलती है वहां वही समर्घ होती है और जहाँ कमती मिलती है वहाँ वही महर्घ होती है और यह समर्घता वा महर्घता लोगों के सं-केत पर भी चलता है क्योंकि सुवर्ण में यद्यपि ऐसे रूप रसादि कोई भी गुण नहीं पाये जाते जो कि पदार्थान्तर में न होवें पर लोगों का संकेत चिरकाल से ऐसा ही बँध रहा है कि दिन दिन वह महर्घ ही होता जाता

है अतएव सभीरूपरसादिगुणोंका साधकभीहोरहाहै औरउस केभी रूपरसादिसभीवस्तुओंके रूपरसादिकोसे लोगोंकोउत्तम ही मालूम होतेहैं औरयोंतोयत्किञ्चित रूपरसादिवागुणदुर्गुण सुवर्णया सभीपदार्थोंमेंहैं परजिनपदार्थोंमें लोगोंकाजैसा उच्चा वचसंकेतवधरहाहै वैसीहीउसपदार्थकीमहर्घता व समर्घताभी लोकप्रसिद्धहै अतएवधनिकोंकासंतोष अल्पमूल्यऔषधादिसे नहींहोसकेगा इसलियेबहुमूल्यभी औषधादिग्रंथादिमें दिखायेहैं एतावता अल्पमूल्यऔषधोंके कोईहीनगुणसमझै सोनहींहोस- कता क्योंकि बहुतसेलोगोंकासंतोष उनसेभीहोसक्ताहै एतद्वि- षयमें यद्यपिबहुतसाउपपादनअपेक्षितहै परबुद्धिमानलोगथोड़े हीमें बहुतसमझलेवेंगे अतएव महाभारतप्रसिद्ध छोटाइतिहास कहाजाताहै कि अश्वत्थामाकीमाता उनको दूधके जगह दारि- द्र्यकेकारण चावलकाधोवनपिलाती थीं और बहुतदिनोंतक वे उसेदूधसमझके पीतेथे और बड़ेबड़ेदूधपीनेवाले राजकुमारोंसे अधिकबलव कलाकौशल संपादनकरतेथे जबपीछेकिसीकारणसे उनकोयहबातमालूमहुई तोफेरउन्नेभी ठीकदूधपीनाप्रारम्भकिया तो इसइतिहासकेदेखनेसे यहभीबातस्थिरहोतीहै कि गुणदुर्गुण केवल पदार्थोंहीपर नहींहै किन्तुमनके पकड़परभी स्थिरहै तो जिसकीजैसीपकड़है वैसाही उसकेशरीरमें पदार्थोंके गुणदुर्गुण होतेहैं तोयहबातसिद्धान्तभूतसबकोसमझनीचाहियेकि असाम- र्थ्यऔरसामर्थ्यकेवलविचारशक्तिके तारतम्यपरलोगोंकाहै जब मनुष्यविचारशक्तिसे देखेगातो असमर्थभी समर्थहोसकताहै तो सभीकोउचितहैकिअपनी बिचारशक्तिसे अपनी असामर्थ्यकोव परवशताकोदूरकरके अपने शरीरके अनुकूल आहारादिरखे कि जिससे दिनदिन बलबुद्धिवृद्धिहोवे अबइसजगहबहुत अनभिज्ञ लोग ऐसाकहतेहैं किबलकोईचीजनहींहै किन्तुबुद्धिहीसर्वहित- साधन है क्योंकिजिसकोबुद्धि वहीबलवानहै।

(वुद्धिर्यस्यवलन्तस्यनिर्वुद्धेश्वकुतोवलम् बनेसिंहोमदोन्मत्तोज-म्वुकेननिपानितः)

परयहवातसर्वथा लोकशास्त्रविरुद्धहै क्योंकिउपनिषदोंमें यहसिद्धान्तकियाहै कि सैकड़ोंवुद्धिमानोंको एकवलवान दवा-देसकताहै ।

(शतंवुद्धिमतामेको वलवानाकम्पयते)

इत्यादिअवरहानीतिकारोंका अभिप्रायसोयहहै किकेवलब-लअपनेकामोंको वयसापूरानहींकरसकता जैसाकीवुद्धिसहित-वल अपनेकामोंको यथार्थपूराकरताहै अतएवमनुष्योंकी वलवु-द्धिदोनोंके वृद्धिकाभरपूरप्रयत्न रखनाचाहिये औरविचारनेपर तो यहस्थिरहोताहै कि जोवलिष्ठहै वहीअपनेवुद्धिकोभी परिष्कृ-तरखसकताहै औरजोदुर्वलहै उसकीवुद्धिभी ठीककामनहींदेस-कती क्योंकि उपनिषदोंमें यहइतिहासप्रसिद्धहै कि एकमहर्षि-पुत्र सम्पूर्णशास्त्रपढ़ेथे परसोलहदिनतक कुछनहींखाया वाद-उनसेपूंछागयातो सभीशास्त्र उनकाभूलगया जवफेरउननेखा-यके क्रमशःवलसंपादनकिया तो फेरक्रमशःउनको अधीतग्र-न्थोंका स्मरणहुआइत्यादि तोइनइतिहासोंके देखनेसे वुद्धिभी-वलाधीनही मालूमपड़तीहै अतएवमहावीरकेविषयमें ।

(मनोजवंमारुततुल्यवेगंजितेन्द्रिययंवुद्धिमतांवरिष्ठम्)

यहश्लोक अत्यन्तप्रसिद्धहै औरइसश्लोकमें जितेन्द्रियत्व-जोदिखायाहै वहीसवकामूलकारणहै औरवुद्धिमत्व औरमनोज-वत्वआदि उसीकेकार्यहैं औरवुद्धिमत्व औरवलवत्व येदोनोंप्रायः साथहीरहतेहैं इसकेउदाहरणभीष्मपितामह श्रीरामचन्द्र भरत-आदि वहुतसेहैं औरसर्वत्र इनदोनोंकाकारण ब्रह्मचर्यहीहै तस्मात्शरीरकेविषयमें वलसम्पादनरखना विशेषउपकारक स-र्वकार्यसाधक औरवुद्धिवर्द्धकहोताहै औरइसवलकाप्रधानका-

रण ब्रह्मचर्य्य औरव्यायाम (कसरत) यहीदोहैं उनमेंब्रह्मचर्य्य-कीमहिमा भारत मनुस्मृति आदिसभीग्रन्थोंमें इतनाकहाहै कि जिसकालिखना इसछोटेग्रन्थमें असम्भवहैपरसंक्षेपेण इतनाअवश्यसमझनाचाहिये कि यहब्रह्मचर्य्यशरीरमें बल ।कान्ति ओज तेज प्रताप वीर्य पराक्रम उत्साह उद्योग सत्य शौर्य धैर्य आयु-धारणाप्रतिभा इत्यादि जितनेअच्छे गुणहैं सभीकोबढ़ाताहै जिसकेप्रधानउदाहरण हनुमानभीष्मपितामह आदि भारतादिप्रसिद्धहैं अब यद्यपिइसजगहपरलोगशंकाकरैंगेकि गृहस्थपूरेरीतिसे कैसेब्रह्मचर्य्यकरसकताहै तोइसकाउत्तरयहीहै कि जैसा मन्वादिस्मृतियोंमेंलिखाहै तदनुसारेण जोगृहस्थवर्त्तावकरताहै वहब्रह्मचर्य्यहीमेंगिनाजाताहै ।

(ब्रह्मचार्य्यैवभवतियत्रतत्राश्रमेवसन्)

संक्षेपसेउसकीरीति यहहैकि छत्तीसबरसतक अथवातीसबरसतक अथवा निकृष्टपक्ष अट्ठाइसबरसतकतो पुरुष स्त्रीकासंगबिलकुलनकरे बादमासमेंदोतीनदिनस्त्रीसंगकरे जबपुत्रादि उत्पन्नहोजावे तोबिलकुल स्त्रीसंगनकरे यहीरीति मन्वादिस्मृतियोंमें गृहस्थकेवर्त्तावकीलिखीहैं तोइसरीतिसेचलनेवाले मनुष्योंके बलबुद्धिआदिकीहानि अधिकनहीहोसकती औरजोयत्किञ्चितहोगीभी उसेजोसत्पुत्रआदिपैदाहोंगे वेउसहानिकोपूराकरैंगे क्योंकि पुत्रकाशरीरभी अपनाहीशरीरान्तरश्रुतिआदिकोंमेंलिखाहै । (आत्मावैजायतेपुत्रः)

इत्यादि औरव्यापकगुण सुश्रुतआदिग्रन्थोंमें ऐसेदिखायेहैंकि जैसेसिंहकेभयसे सबमृगभागतेहैं ऐसेहीव्यायामकेभयसे सभीरोगभागतेहैं परन्तुयहव्यायाम जबअत्यन्तस्वस्थ शरीररहे तभीहितकारीहोताहै औरयदिशरीरमें ज्वर वाक्षीणताआदि कोई-प्रकारकारोगरहे तो प्रतिकूल (अहितकारी) होताहै औरइस

व्यायामके साधनकाबहुतहीप्रकारकठिनहै अर्थात्शरीरकेवलको क्रमशःक्रमशःबढ़ातेबढ़ाते व्यायामकीमात्राकोभी बढ़ानाचाहिये अन्यथाव्यायामसेभी नानाप्रकारकेरोगभी उत्पन्नहोतेहैं यद्यपि-तत्तन्मनुष्योंके प्रकृतिभेदहोनेसे कोईवस्तुऐसीनहीं कहीजाय-सकतीकि जोसबकोहितवअहितहो परप्रायः जोबहुतलोगोंको हितकारीवस्तुहै सोसंक्षेपेणदिखाईजातीहैं मनुष्यकोउचितहै कि डेढ़घंटारात्रिबाकीरहै उठकेगंगोदक वात्रिफलाकेउदकसे नेत्र प्रक्षालनकरे औरशीतमधुरजलसे मुखादि प्रक्षालनकरे उसीवक्तकरीबबारहघूंटकेशीतलमधुरजलपीवै इसीजलपानको उषःपानकहतेहैं इसकावड़ाभारीगुण ग्रंथोंमेंलिखाहै उसमें-दृष्टान्तहैकि जैसेनित्यकेपाककरनेके पात्रोंकीजलआदिसे स-फाईकीजातीहै उसीप्रकारउदरके भीतरके आमाशयकीसफाई इस उषःपानसेहोतीहै औरजैसे पाकपात्रकीसफाई नकरके पुनः पुनः उसीपात्रमें लेपादिक्रमशः इकट्ठेहोके औरदिनदिनअन्नादि पाकको कुरसकरतेहैं उसीप्रकार भीतरकेआमाशयकीभी जो लोगउषः पानद्वारा सफाईनहींकरते उनकेअमाशयमें क्रमशः क्रमशः किट्ट(विकृतमल)इकट्ठाहोके प्रतिदिनभुक्तान्नादिका यथार्थ परिपाकहोने व रसादिवनानेमें प्रतिबंधकहोके क्रमशः नाना प्रकारकेरोगोंकोउत्पन्नकरताहैं इसलियेयहउषः पान सभीमनुष्य को प्रायः हितकारीहै बादशौचादिक्रियाकरके दन्तधावनकरे यद्यपिदन्तधावनकेविषयमें बहुतसेविधिनिषेध ग्रंथोंमेंदिखायेहैं परबकुल (मौलसरी) कादन्तधावन दन्तकेपुष्टताआदिकेविषय में सर्वोत्कृष्टहै औरबबूरकादन्तधावन उससेतोनीचेहै परऔर सबदन्तधावनोंसे उत्तमऔरसुखद औरसुलभहै परकंटकीवृक्ष कादन्तधावननिषिद्धहै अतएवबहुतलोग इसेपसन्दनहींकरते नीबकादन्तधावन यद्यपिदन्तकेपुष्टतादि विषयमेंतो विशेषउत्तम

नहींहैपरमुखकेदुर्गंध्य व वैरस्यआदिविषयमें विशेषहितकारीहै औरशास्त्रविहितभीहै अतएववहुतलोग इसीकोपसन्दकरतेहैं परयहदन्तधावन ताजाहीअच्छाहोताहै औरसूखनेपर भिगोनेसे भीठीकनहींहोता सिहोरढ़ेराआदिका दन्तधावनभीउत्तमहै अपामार्गकेजड़का दन्तधावनबहुतपवित्रहै दन्तधावनकेसमय वहुत लोग सैन्धवनिमकका चूर्ण उसीकीकूचीसेबोरके दांतमेमलतेहैं सोवहभीवहुतफायदाहै क्योंकि यह वातआपामर प्रसिद्धहै ।

(आँखीत्रिफलादाँतेनोन पेटेखाईतीनिनकोन)

औरदन्तधावनको बहुतलोगछीलकेवल्कलहीनकरडालतेहैं सोठीकनहीं क्योंकि शास्त्रसे निषिद्धहै औरउसकागुणभी कम तीहोजाताहै औरयहदन्तधावन वारहअंगुललंबा औरकनिष्ठिकाग्रकेसमान मोटा ग्रन्थोंमें लिखाहै परसोलेखदृष्टार्थमालूम पड़ताहै अतएव जैसाजिसकोअनुकूलहोन्यूनाधिकभीहोसकता हैऔरवनेतक तीनकूचीतकदन्तधावनकरनेमें पूरीदन्तशुद्धि होतीहै इससेन्यूनाधिक जिसकोजैसाअनुकूलहो वाददन्तधावन के उसकोचीरके जिह्वाशोधनभीकरतेहैं वहुतलोगरजतादिकी जीभीसे जिह्वाशोधनकरतेहैं सोठीकनहीं दन्तधावनकेवाद प्रातः स्नानग्रन्थोंमें विहितहै औरवहुतउपकारकभीहैं यद्यपि योगियाज्ञवल्क्यने यहभीलिखाहै कि दन्तधावनकेबादभीप्रातः सन्ध्या मनुष्यकरसकताहै तोउनके इसलेखसे गृहस्थको जैसा मध्यान्हस्नानकीआवश्यकहै वैसीप्रातः स्नानकीआवश्यकता नहीं मालूमपड़ती परमनुस्मृतिकेदेखनेसे गृहस्थकोप्रातः स्नानभी अत्यावश्यकहै क्योंकिउसमेंप्रातःस्नानकी विशेषप्रशंसालिखीहै और अनुभवसिद्धभीयहवातहै कि प्रातः स्नानमनुष्यके बलवुद्धिमेधाकान्ति आदिगुणोंको अतिशीघ्र बढ़ाताहै कईलोगजाड़ेआदिकेदिनोंमें उष्णोदकसेस्नानकरतेहैं

परनिरोगशरीरमें शीतोदकसेस्नानकाअभ्यासरखनाहीहितहै क्योंकि उष्णोदककेस्नानकरनेसे रुधिरत्वकआदिमें कुछविकार शोषादि होनेकासंभवहै हाँजिसकाशरीरअत्यन्तदुर्बल वाशीत-भीरुहोवे उसकेलियेतोउष्णोदकस्नानही गुणदहोगाइत्यादि यथासमयविचारलेनाचाहिये स्नानोत्तरसन्ध्यावन्दन देवपूज-नादि शास्त्रोक्तकृत्यकरके बहुतलोगकुछकल्याहार (कलेवा) करतेहैं सोइसमेंभी अपनेअपनेप्रकृतिकेअनुकूल जोहितकारीहो सोलोगकरतेहीहैं जैसेगरमीकेदिनोंमें कूष्माण्डपाक (गरीकी बरफी) आंवलेकामुरब्बाआदि एवंवर्षामें आमकामुरब्बाआदि एवंजाड़ेमें बदामका हलुआ आदि परसबऋतुओंमेंसबसे ज्यादाहितकारी दाखकाकलेवा मालूमपड़ताहै क्योंकिइसमेंकोई तरहका दोषनहींहै औरसर्वत्रसुलभभीसबको हो सकताहै पर जिसकाआधसेर अन्नसेअधिकआहारनहींहै उसेबारहदानेसे अधिक इसकाकलेवानकरनाचाहिये क्योंकिअधिककलेवा करने से क्रमशःमन्दाग्निहोनेकाभयहै यहदाखरुधिरको अत्यन्तशुद्ध करताहै औरबढ़ाताभीहै बल्किलोगयहाँतक कहतेहैं किइसका सर्वांश जाठराग्निसेपरिपक्वहोके रुधिरहीहोजाताहै औरयह ज्वरघ्न कासघ्नभीहै औरभीबहुतसेरोगोंको यहद्राक्षाशान्त करतीहै अतएवइसकासेवन बहुतउत्तमहै यद्यपिधारोष्ण (तुरन्तकादुहा) गोदुग्धभी कलेवाकेलिये बहुतउत्तमहै परयह सबको सर्वत्रसुलभनहींहै औरकिंचित्कफकारीभीहै और ज्वर शेषादिअवस्थामें कुछप्रतिकूलभीहै अतएवयह तथाविधउत्तम नहींहै हाँ जिनलोगोंकेउदरमें गरमीज्यादाहै उनकेलिये अव श्ययहविशेषहितकारीहै बल्किअधिकगरमीवालेको आधादुग्ध और आधाशीतलजल और यत्किंचित्मिश्री खूबमिलायकेलेने से लघुशंकाआदिकीसफाई बहुतरहतीहै परउपःपानकरनेवाले

को उसीसेइसकाभीकामहोताहै अतएवइसकीभी आवश्यकता नहींपड़ती औरयहकलेवाकरनाउसीपुरुषको आवश्यकहै जिस कीक्षुधाअत्यन्तप्रदीप्तहोवे क्योंकिविनापूर्णक्षुधाप्रदीप्तहुये कुछभी खाना सेवायअहितके हितकभीनहींकरसकता बहुतलोग पिपा-सालगनेपरभी प्रातःवगैरकुछखाये जलपीनेमें अवगुणमानतेहैं परसोवातठीकनहींहै क्योंकिभूखलगनेपरभोजन वपिपासालगने परजलपान करनातोहितहै औरइसकेप्रतिकूल अर्थात् क्षुधामें जलपान वपिपासामेंभोजन सिवायरोगकारकके हितकारीकभी नहींहोसकता इसलियेउचितयहीहै कि विनाक्षुधाके मनुष्यकभी कुछभी नखाय बहुतलोगभोजनके दोतीनघंटापहिले कलेवाके अव्यवहितोत्तर इतनाजलपीलेतेहैं कि जिससे भोजनकेउत्तरभी कुछकालतकपिपासानलगे औरभोजनकरतेसमयभीजलपीनान पड़े किन्तु वहीआदौअन्तेचआचमनादिमात्रसेही तृप्तिहोजायऔर भोजनोत्तरदोघंटावितायके पिपासाके अनुकूलजलपान शनैः शनैःकरतेहैं औरकहतेभीहैंकि जैसे वाह्यपाककी यहप्रक्रिया-सुगमवसुखदहै कि पहिले अदहनखूबप्रतप्तहोनेपर चावलदाल खीचरीआदिछोड़ीजातीहै फेरपीछेजलकमतीहोनेपर परिपक्व तोन्मुखतावस्थामेंयथासमावेशजलदियाजाताहै तोवहपाकउत्तम तैयारहोताहै इसीप्रकारभीतर जाठराग्निके पाककीभी प्रक्रिया उत्तमहोगी कि पहिलेजलपीके औरउसेजाठराग्निसे परिपक्व करके तोभोज्यान्नादिउसमेंछोड़ना इत्यादि औरइतनातोअनु-भवसिद्धभीहै किजोमनुष्यभोजनात् दोतीनघंटापहिलेजलपीके औरपुनःशौचादिक्रियाकरके औरमध्याह्नस्नानकरके भोजनकरते हैं उनकोग्रीष्मऋतुमेंभी भोजनकेसमयमेंपिपासानहींलगती और प्रातःशौचादिसे जोयत्किंचित्उदरशुद्धिवाकीरहतीहै सो पूर्ण रूपेणइसजलपानशौचादिसे होतीहै औरलिखाभीहै (यन्मूत्री-

त्रि:पुरीषी) छदफेदिनरातमेंमूत्रशुद्धिऔरतीनबारमलशुद्धिकरने वालापुरुष नीरोगरहताहै तोसायंमध्यान्हप्रातः यहीतीनोमल शुद्धिकेकालहोवेंगे इत्यादिऔरबहुतलोगमध्याह्न मलशुद्धिको भोजनोत्तरहितकारीकहतेहैं और यहभीकहतेहैं कि भोजनादिके गरमीकीशुद्धि भोजनोत्तरशौचादिक्रियाके करनेहीसेठीकठीक होतीहै परइसपक्षसेपहिलापक्षअर्थात्मध्याह्नस्नानात्प्रागे व शौचादिक्रियाकरना अनुकूलसालूमपड़ताहै क्योंकिबहुतलोगोंका यहभीनियमहै कि शौचोत्तरस्नानभीकरतेहैं तोयद्यपियथार्थ जलमृत्तिकादिशुद्धिसे ठीकठीकशरीरशुद्धिहोजानेपर शौचोत्तर स्नानकीआवश्यकता वा कोईशास्त्रीयविधिनहींहै तथापिस्नान करनेकायदिकोईनिषेधभीनहींहै औरजिसकाशरीरनीरोग और सबलहै औरशीतादिजिसकोबाधकनहींहोसकते और जिसकी मनःशुद्धि शौचोत्तरस्नानकेविनानहींहै उसकोस्नानकरनेमें कोई हानिनहींइतनाहीनहीं प्रत्युतलाभहीहैतोयहबातभोजनोत्तर शौचादिक्रियाकरनेमें ठीकनहींपड़तीक्योंकि भोजनोत्तरस्नानऔर आदिनिषिद्ध वविशेषअहितकारीहै अबभोजनकेसमयमें पहिले जठराग्निकोप्रदीप्तकरनेवालेहिंग्वादिचूर्णआदिकोईवस्तु अवश्य खानीचाहियेक्योंकिजैसे अत्यन्तप्रदीप्तअग्निमेंआहुतिदेनेसे बहुत शीघ्रउसकादाहादिहोताहै उसीप्रकारपहिले जाठराग्निकोप्रदीप्त करके भोजनकरनेमें उसभुक्तान्नादिका अतिशीघ्रपरिपाक सुख सेहोताहै अतएवदीपकपाचकरोचकवस्तुकासेवन भोजनके पूर्वअवश्यकरनाचाहिये बल्कि चटनीअचारइत्यादिचीजें जो भोजनकेपहिलेपरोसीजातीहैं उनकाभीयहीअभिप्रायहै हाँक्रमशः अनभिज्ञलोगोंने उनसबचीजोंको केवलअधिकभोजनार्थ वजिह्वा स्वादपूर्त्यर्थ समझलियाहै सोउनकाअज्ञानमूलकहै तोउनचीजों मेंयद्यपि जीरा मरिच जवाइनशुंठी पुदीना धनियाँ सैंधवसों

चर आदिबहुतसेपदार्थसभीतत्तात्प्रकृति तत्तद्देश तत्तत्काला
नुसारेण सभीउत्तमोत्तमहैं परसैन्धवऔरआर्द्रक (आदी) का
सेवन भोजनात्प्राक् सर्वऋतुमें सभीको सर्वत्रमात्राकीतारत
म्यसे हितकारकमालूमपड़ताहै क्योंकि यहआर्द्रककेवल दीपक
पाचक रोचक हीनहींहै किन्तुमेधावर्द्धक बुद्धिवर्धकबलवर्द्धक
आदिभी ग्रन्थोंमेंलिखाहै !औरकफघ्नतो इसकेबरावरकोईभी
वस्तुनहींमालूमपड़ती हाँइससे कुछन्यूनकफनाशकता कस्तूरी
मेंहै सोसबबात अत्यन्तप्रसिद्धहै क्योंकिप्राणान्त समयमेंकण्ठा
वरोधनका सर्वोत्कृष्टऔषधकस्तूरी औरआदीकारसयहीहै अत
एवभोजनात्प्राक् सैन्धवसंयुक्तआर्द्रकका सेवनसबकोहितहै
सोग्रन्थोंमेंलिखाभीहै कि—

(भोजनाग्रेसदापथ्यं लवणार्द्रकसेवनम्)

औरयहबातअनुभूतभीहै किजिनपुरुषोंकोचिरकालसे उदा
वर्त्त शूल अजीर्ण मन्दाग्नि आदिरोगरहतेहैं उनकेसबरोगोंको
क्रमशःकियत्कालमें यहआर्द्रकदूरकरताहै अतएवभोजनकेआ
दिमें इसकासेवनबहुतहीउत्तमहै अबभोजनकेविषयमें यद्यपि
नानाविध पदार्थहितकारीप्रसिद्धहैं तथापिमध्यदेशमें गोहूँ चा
वल रहरकीदाल काज्यादाप्रचारहै इनमेंभीचावलका दक्षिण
पूर्व उत्तरइनदेशोंमें बहुतहीप्रचारहै औरग्रन्थोंकेदेखनेसेयह
मालूमभीपड़ताहै कि योंतोजोहीचीजखाईजाय सभीकाअन्नना
महोसकताहै परखासकरके अन्नसंज्ञाचावलोंहींकीहै।

(भिस्सास्त्रीभक्तमन्धोन्नम्)

तबतोअन्नकेजितनेगुण लोकशास्त्रप्रसिद्धहैं सबमुख्यतः
चावलोंहीकेसमझनेचाहिये औरमध्यदेशमेंप्राय:यहबातभी प्रसि
द्धहैकि जिनजिनवंगकलिंग तैलंग महाराष्ट्र सयूपार नेपालकूर्मा

चल ओड़ीसा आदिदेशोंमें चावलखानेकीचालीहै वहांकेलोग-प्रायःदेशान्तरापेक्षयाअधिक बुद्धिमानदीखपड़तेहैं हांइतनीवात-अवश्यहैकि केवलचावलखानेवालामनुष्य इतनावलिष्ठनहींहोस-कताकि जोकसरतकुश्तीआदिकापेशाकरसके औरयोंतोलौकिक कार्यनिर्वाहक्षम वलभीचावलोंमेंवहुतहै औरगानेवालेलोगभी प्रायःघीखीचरीखाना प्रसन्नकरतेहैं क्योंकि गलेकास्वररोटीखा-नेसे ठीकनहींरहता औरजिनलोगोंको पढ़नेपढ़ानेआदिमें रात्र-जागरण व बैठकेलिखनेआदिके विषयका योंखड़ेहोकेनक्तृत्त्व-आदिकरनेका ज्यादापरिश्रमरहताहै वेलोगभीघीचावलोंहीको प्रसन्नकरतेहैं क्योंकियहरोटीआदिकेअपेक्षया अत्यन्तलघुपाकहै औरयोगीलोग इसीकीमहिमाज्यादामानतेहैं तोइसकाभीकारण-वहीहै हांजोलोगमंजिल चलनेपत्थरढोने बोझाउठाने आदिशारी-रव्यापारकरतेहैं उनकोकेवलचावलखानेसे उतनावलनहींहोता अतएववेरोटीखानापसन्दकरतेहैं औरजोलोगइतनेकड़ेशारीरव्या-पारमें नहींरहते किन्तुबैठेबैठेकेवल लिखनेपढ़नेजागनेआदिका श्रमकरतेहैं उनकोकेवलरोटीखाना अच्छानहीं क्योंकि यहरोटी-अत्यन्तगरिष्ठहोतीहै तोबिनाभरपूरशरीरव्यायामहुये इसकापरि-पाकयथार्थनहींहोता बल्कि चावलमेंभी जितनाप्राचीनहोताजाताहै उतनाहीलघुपाक औरजितनानवीनरहताहै उतनाहीगरिष्ठ होता है अतएवभारीजागरणादिके व्यवसायी बिनाचारपांचबरसके प्राचीनहुये नवीनचावलोंकाभी बहुतहीकमव्यवहाररखतेहैं अवयद्यपियेचावलसभीदेशोंमेंउत्तममध्यमआदिहोतेहैं परपेशौरके नगीचवहरद्वारकेनगीच सरयूपारकाशीप्रान्तमें बहुतउत्तमहोतेहैं औरपूर्वदेशमें यद्यपिचावलहोतेतोबहुतहैं परवेउत्तमनहींहैं बहुत लोगकहतेहैंकि चावलोंकेखानेसे बायुकाज्यादाप्रकोपहोताहै पर सोबातकिसीप्रमाणसेसिद्धनहींहै औरयोंतोअधिक वाकच्चावा

कुरीतिसे जोहीचीजखाईजायगी वहीसिवायदुर्गुणके औरगुण कभीनहींकरसकती तो इनमेंचावलोंकाक्याअपराधहै हाँइतनी बातअवश्यहै कि येचावलअनुलोमन (कोष्ठशुद्धिकारक) पूरेतौर परनहींहै अतएवकेवलइनकाखानाठीकनहीं किन्तुदूधयामट्ठाया घी याअरहरआदिदालके यूषआदिके संगइसका खानाफायदा और केवलचावलोहीपर क्यासभीवख्तमनुष्यको इसबातकाध्यान तो अवश्यही रखनाचाहिये कि कलेवावाभोजनआदिमें ऐसीहीं चीजखानीचाहियेकि जोकोष्ठवद्धकनहो क्योंकि कोष्ठवद्धहोना सभीरोगोंकामूलकारणहै अतएवइसबातपरप्रतिक्षणध्यानरखना चाहिये कि यदिकोईचीज कोष्ठबन्धकखानेमेंआवेतोतद्दोषनि- वृत्यर्थ भोजनकेअन्त्यमें दूधमट्ठाकढ़ीयूषआदि कोईऐसाचीज पीनाचाहिये कि जोसबकायथाथेपरिपाककरके अनुलोमनकरे औरभोजनकेमध्यमें भीचटनीशाकआदिभीऐसेहीरहनेचाहियेंकि जोपाचक औरअनुलोमनविशेषहोवें जैसेपरवलचौराईका साग मूलीकीजड़ सूरनआलूआदि औरजोचीजें कोष्ठकोवाँधतीहैं जैसेअरुईकटहर कोहड़ानेनुआँरामतरोई तरोईलौआआदि इनकाव्यवहारभोजनादिमें ज्यादानरहनाचाहिये औरयदिकभी भोजनव्यवहारमें येसवचीजेंआवेंभी तोअरुईमेंजवाइनऔरघी औरकटहरमेंअधिकतरघीइत्यादि जोचीजेंजिसकेदोषकोभरपूर शान्तकरसकतीहैं उनचीजोंकेसाथही तत्तत्पदार्थोंको भोजनमें लानाचाहिये औरवहुतसीचीजें तो ऐसीहैंकि मनुष्यकितनीभी वन्दिससे उनकोखायतोभीवे अपनाभरपूरदुर्गुणकरतेहीहैं जैसे अरुईकटहरकोहड़ाआदि कईएकलोगशाकोंमें नेनुआँभिण्डी आदिको नीरोगसमझतेहैं परयेविशेषकोष्ठवंधक वआमकारक औरविचारनेपरतो वहुतहीकमशाकऐसेनिकलेंगे जिनमेंकुछभी दुर्गुणनहोक्योंकियहबात आपामरप्रसिद्ध है कि—

(शाकेनप्रभवन्तिरोगाः)

फेरकइएकलोगऐसाभी कहतेहैं कि एकचिड़ियाबोलतीहैकि-(कोऽरुक्कोऽरुक्कोऽरुक्) फेरदूसरीइसके जवाबमेंबोलतीहैं। (हितभुक्मितभुक्अशाकभुक्)

तोयद्यपिचिड़ियोंकेवचनका यहतात्पर्यनहो क्योंकि वे अस्पष्टबोलतीहैं तथापिइसमें कोईसंदेहनहींकि जोमनुष्यअनुकूल वर्तौलाभया वृशाकरहितखातेहैं वेनीरोगरहतेहैं वहुतसेवुद्धिमान् यहभीकहतेहैंकि चटनीअचारतरकारी रायताआदि जितनी रुचिकारकचीजेहै सभीफलतःदुर्गुणकरतीहैं क्योंकि इनचीजों-कीसहायतासे अवश्यअन्नकुछअधिकखायाजाताहै तोअधिक-अन्नादिखानेमें अजीर्णअपरिपाकादिदोष सद्यःअनुभवसिद्ध रखाहीहै क्योंकि मनुष्यकोयदिपूर्णरूपेणक्षुधारहेगीतो अवश्य-शाकादिरहितभी अन्नपूर्णरूपेणप्रियमालूमपड़ेहीगा तोफिरशा-कादिकोंका केवलदोषवढ़ानेके औरक्याप्रयोजनहै हाँजिससमय जिसवस्तुका शरीरमेंउपयोगहो उन्हींवस्तुओंकाउससमय भो-जनादिकरनाचाहिये क्योंकि उपनिषदोंमेंभीयहीसिद्धान्तकियाहै कि श्रेय (कल्याणकारक) पदार्थऔरहैं औरप्रेय (प्रीतिकारक) पदार्थऔरहैंतोवुद्धिमानको श्रेयकेतरफदृष्टिकरनाचाहिये और प्रेयकेतरफदृष्टिनकरनाचाहिये तोयहन्याययदिसांसारिक सभी विषयोंपरहै तोभोजनके विषयमेंभी अवश्यहीहै क्योंकिभोजनतो-सर्वथा शरीरस्थितिकाप्रधानकारणहै गोधूमकेविषयमें यहवात-अनुभवसिद्धहै किजोवहुतदिनतकइसीकोकेवलखातेहैं औरभारी-शरीरव्यायामनहींकरते औरइसकेअनुलोमनका विशेषउपायनहींर खतेअवश्यउनकोआमअजीर्णप्लीहाआदिहोनेकासंभवरहताहै क्यों किइसमेंएकचालका चिक्कटपनाइतनाज्यादाहै कि आमाशयमेंचि-पकजाताहैऔरअतिसूक्ष्म इसकाचूर्णतो चाहेकितनाभीघीआदि

देकेखायाजावे परअवश्यकुछनकुछ चिपकताहीहै अतएवइसकी रोटीथोड़ीहीखानीचाहिये हाँयबहुतनीरोगअन्नहै क्योंकिइसमें कोईतरहकादोषनहींहै परइसकीरूक्षताकेनिवृत्यर्थ सघृतखाना चाहिये और बाजराआदितोकदन्नत्वेन प्रसिद्धही है द्विदलोंमें आढ़कबहुतनीरोगहै औरमुद्गभीवल्कलरहित अच्छाहीहैपरकिंचित्वातकारकहै औरवल्कलसहिततो बहुतहीवातकारकहैऔर माषकलायमोथीकुरथी मसूरआदितोबहुतहीखराबहैं औरभोजन केसमयघृतकाव्यवहारद्विदलमें बहुतहीउत्तमहै भातमेंभी उतना फायदातोनहींहै परअच्छाहीहै और दालगाढ़ी खानाहित नहींहै किन्तु सघृतयूषगुणदहै रोटीमेंघीलगानाअच्छानहींहै किन्तु आटेहीमेंपहिलेघीमिलायके रोटीबनानाअच्छाहै यदिअधिकघी खानाहोतो दालमें तथा भातमें पकतेहीसमय पहिलेसे देदेनेसे अधिकघीमनुष्य खायसकताहै औरघीकाखाना मनुष्यमात्रके लिये अत्यन्तहीहितकारीहै बल्कियहाँतक मम्मटभट्टआदिकोंने लिखाहै कियहघृतसाक्षात्आयूरूपहै केवलमनुष्यको क्यागौबैल आदिकोंको तोघृतप्राय: बीमारीमें महौषधस्थानमें दियाजाताहै सोयुक्तियुक्तहीहै क्योंकि जितनीनाड़ीआदिहैं उनकेसन्धियोंमें चलनेआदिसे जोरगड़पैदाहोतीहै उससेउसमेंत्रिसकेदौर्बल्यादि पैदाहोके कमजोरीवटूटनेआदिकासंभवरहताहै तोइसउपद्रवकी शांति सिवायघृतकेऔरदूसरीनहींहै क्योंफि यहलौकिकदृष्टान्त प्रसिद्धहैकि गाड़ीकीपहियाचकरगड़ारीआदिजोचलनेकीचीजेंहैं उनमेंअवश्यतैलघृतआदि कोईभीस्निग्धपदार्थ अवश्यबीचबीच मेंदियाजाताहै तभीवेठीकचलतेहैं अन्यथामुरचालगके रुकने व टूटनेकाभयरहताहै इसीप्रकारशरीरके सभीसंधियोंकाहालहैअत एवतद्विषयमेंबहुतलोग यद्यपितैलका व्यवहार करतेहैं परसोठीक नहींक्योंकि ग्रन्थोंमें सभीजगह तैलकीमहिमा केवलमर्दनहीमें

मिलतीहै औरभोजनकेविषयमें सर्वत्रतैलकी निन्दाभीमिलतीहै। (अन्नाद्दशगुणंपिष्टंपिष्टाद्दशगुणंपयःपयसोष्टगुणंमांसंमांसाद्दशगुणंघृतम्॥ घृताद्दशगुणंतैलं मर्द्दनेनतुभोजने।)

हाँजिनलोगोंकोदारिद्र आदिकारणसे घृतसर्वथाअलभ्यहै उनकेलियेविलकुलनिस्नेहभोजनापेक्षया तैलहीकास्नेहभोजनमें रखनाअच्छाहीहै परतैलोंमेंतिलतैलसवसेअच्छाहै औरसर्षप तैलवहुतहीउष्णवीर्यहै औरअरसीआदिकातैलतो वहुतहीनिन्द्य है सारांशयहहैकि सर्वथानिःस्नेहभोजन वनेतकनकरनाचाहिये क्योंकिरूक्षभोजनसे वायुकाविशेषकोपहोताहै अतएवभोजनमें कुछस्निग्धपदार्थअवश्यरहनाचाहिये अवयद्यपिघृतखानेके तत्तद्देशमेंनानाविधप्रकार भिन्नभिन्नप्रसिद्धहैं तथापिएकाधप्रकार जोसर्वोत्कृष्टहैं सोपहिलेशुद्धघृतको अग्निपरचढ़ाकेजीरालवंग लायचीउसमेंदेके उसमेंदालछोड़के जबवहदालभुनजायतोउसमें अन्दाजसेजलछोड़के बन्दकरके जबपरिपक्वहोजायतोखाय १ अथवापहिलेजलमेंदालको अर्धपककरकेतबघीछोड़के मुखवन्द करके परिपककरके खाय २ अथवादालपरिकसिद्धहोनेपरघृत तपायकेउसमेंमिलायके खाय ३ चावलोंमेंभीघीखानेके यहीसब प्रकारहैं रोटीमेंघीलगायकेवहुतलोगखातेहैं सोठीकनहीं क्योंकि उसमें जलकाप्रवेशदेरीसेहोताहै अतएवउसकापरिपाक भी विलंबसेहोताहै भोजनमनुष्यको जितनीक्षुधाहो उसका आधाकरनाचाहिये औरएकभागजलसेपूर्णकरनाचहिये औरएक भागवायु के संचारार्थखालीरखनाचाहिये तबअन्नकापरिपाक वहुतसुखसेठीकहोताहै औरइससेअधिक भोजनकरनेमेंकुछन कुछ दुर्गणहोताहीहै भोजनकेअन्त्यमेंदुग्धपानवहुतहितहै पर वहुतसेलोगयहकहतेहैं कि रात्रिभोजनकेअन्त्यमेंदुग्धऔरदिवा भोजनकेअन्त्यमेंतक्र हितकारीहै क्योंकिदुग्धपानकेवाद शयन

आवश्यकहै औरदिवाशयनसभीकेलिये निषिद्धहै हांग्रीष्मरितुमें किसीकिसीग्रन्थोंमें यदिदिवाशयनलिखामिलताभीहै तो भोजनात्प्रागेवउसकी विधिहैऔरभोजनोत्तरदिवाशयनतो सर्वथानिषिद्धहीहै तस्मात्दिवाभोजनान्तमें दुग्धापेक्षयापि तक्रसेवन अधिकहितकारीहै औरग्रीष्मऋतुमें दिवाभोजनान्तमें तक्र सेवननतो सद्यःसुखकारी औरअमृततुल्यहितकारी सर्वानुभव सिद्धहै भोजनोत्तरताम्बूललायची पुष्पचन्दनआदि सुगन्धित पदार्थोंकासंग्रहसौमनस्यकारक वचित्तके म्लानताको दूरकरने वाला वभुक्तान्नादिके यथार्थपरिपाकादिका कारणहोताहैं सो सर्वप्रसिद्धहै भोजनोत्तरबायेंकरवटकुछदेरतकलेटरहनेसे वह भुक्तान्नादि यथास्थानठीकठीक पहुँच जाताहै भोजनकेवाददो घंटातकजलपीनानिषिद्धहै तदुत्तरथोडाथोड़ा शनैःशनैःजल पीनाहितकारीहै वहुतलोगदिनकेतृतीययाममेंभी कुछखायकेजल पीतेहैं परसोग्रन्थोंमें अध्यशनकरकेलिखाहै औरनिषिद्धहै और अहितकारीभीहै हाँजिनलोगोंका बंगदेशीयआदिकोंका आजन्म सेयहीनियमपड़रहाहै किविनाकुछखाये किसीसमयजलपीनाही नहीं तो उनकेलिये सभीसमय कुछखायकेजलपीना चाहेअहितकारीनहो परउनकाभीतात्पर्यकेवलनियमपरिपालनहीपरमालूम पड़ताहै क्योंकि वहुतसेलोगएकलायचीदानाखायकेभीजलपीते हैं तो यहखानानखानेहीके वराबरहै। सायंकालवहुतलोगमादक द्रव्य भाँगअफीमआदिकासेवनकरतेहैं औरकहतेभीहैंकिदिनभर केव्यापारोंकोश्रान्ति इससेदूरहोतीहै परन्तुसोठीकनहीं क्योंकि धर्मशास्त्रोंमें ब्राह्मणादि द्विजातियोंकेलियेतो मादकद्रव्यअत्यन्तही निषिद्धहैं औरशूद्रादिकोंकोभी अवश्यबुद्धिवैपरीत्यद्वाराहानिकारकहीहैऔरफेरवड़ाभारीदोषइसमेंयेभीहैकिकितनाभीसावधान पुरुषहो जहांइसकाप्रारंभकिया तहां क्रमशः इस कीवृद्धिहोनेलगती

है अन्तन्तःदोचारवरिसमेंइतनाबढ़जाताहै कि फेरमनुष्यइतना तन्मयहोजाताहैकिदूसरेकामकानहींरहताअबरहीभ्रान्तितोउसके निवृत्तिकेलिये सकलपशुपक्षिसाधारण ईश्वरकृतसुषुप्तिरूप महौषधजगत्प्रसिद्धहै जिससेकिसबतरहकीभ्रान्तिसबकीनिवृत्ति होकेनित्यनित्यमनुष्यकाचित्तनवीनहोताहै तस्मात्मादकद्रव्यसे सर्वथासबकोदूरहीरहनाचाहिये हाँजिनकोरोगादिप्रयुक्तनिद्राभं-गहुआहो उनकेलियेनिद्राकीऔषधियोंमें चाहियेदोचाररोज मादकद्रव्योंकाभीविनियोग चिकित्सकलोगकरें परसोभीधर्म शास्त्रसेसर्वथानिषिद्धहै। रात्रिभोजनरात्रिकेद्वितीययाममेंउचित है बहुतलोगरात्रिभोजनहीको मुख्यमानतेहैं सोगृहस्थोंकेलिये उचितहीहैक्योंकिऐसाबहुतग्रन्थोंमेंलिखाहै किरात्रभोजननकरने से धातुशुष्कहोतेहैं अतएवरात्रिभोजनदुग्धमय वादुग्धप्रधान उचितहै क्योंकिदुग्धसेबढकेधातुपोषकऔरदूसरापदार्थनहींहै (सद्यःशुक्रकरंपयः) अतएवबहुतलोगरात्रिमेंकेवलदुग्धही कासेवनरखतेहैं इसदुग्धकेसेवनमेंभीलोगोंकेनानाविधमतहैंकोई कहतेहैंकि दुग्धपतलाहीहितकारीहै औरजोदुग्ध पकनेसेगाढ़ा हो जाताहै उसमें चाहे स्वाद अधिकहो पर गुणविशेष नहीं है क्योंकिवहतो पदार्थान्तर होगया और बहुत लोग कहते हैं कि दुग्धमेंमिश्रीआदिमधुरवस्तुके संयोगसेउसकागुणघटजाता है औरबहुतलोगकहतेहैंकिमधुरकेसंयोगसे उसकागुणबढ़जाताहै (मधुरंक्षिपःस्वभावतोननुकीदृक्सितशर्करान्वितम)औरबहुतलोग कहतेहैंकिदुग्धउससमयमेंलेनाचाहियेकिजबनिद्राकेलियेबिलकु-लतैयारीकरलेवेअर्थात्दुग्धपानकेबादकुछभीकामवाकोनरहेकिंतु लेकेतुरन्तसोजायसोइनसबविषयोंमेंजिसकाजैसाअभ्यासहो सो हीठीकहै हाँइतनीबाततोउचितहैकि बहुतगाढ़ादूधग[illegible]करता है औरज्यादादूधपीके देरतकजागनेमें शौचादिकाउप[illegible]होताहै इत्यादि स्वस्थशरीरमनुष्यकेलिये पाँचघंटानिद्राकरनाउचित

है इससेन्यूनभीआहारादि लाघवसेक्रमशः अभ्यासात् मनुष्य निद्राकरसकताहैपर बहुतकमनिद्राकरनाभी उचितनहीं क्योंकि उससेनानाविध उपद्रवहोनेकासंभवरहताहै । माँसभोजनमें बहुतसेगुण बहुतलोगकहतेहैं औरबहुतग्रंथोंमेंभीलिखाहै पर मनुस्मृतिमें इसकाविशेषनिषेधहै तोअवश्यउननेकोईभारीदोष इसमेंदेखाहोगा क्योंकिस्मृतिकारलोग जितनेहुयेहैंसभीमनुष्यों के परमहितकारीवभूतभविष्यतकेज्ञाता व परिणामदर्शीहुयेहैं तो वेलोगजोकुछलिखगयेहैंतद्विषयमें किसीकोकुछभीसंदेह नकरना चाहिये अतएवलशुन गृंजन (गाजर) पलाण्डु (प्याज) आदि जितनीस्मृतिनिषिद्धचीजेंहैंसभीमेंपरिणाममें कुछनकुछभारीदोष समझनाचाहिये औरजोकन्दमूलफल हविष्यआदिस्मृतियोंमें विहितहैं उनमेंपरिणाममें भारीगुणभीसमझनाचाहिये बहुतअन भिज्ञलोगस्मृतिकारोंकापरिहासऐसाकरतेहैं किजितनीहितकारी चीजेंहैं प्रायःउनकोस्मृतिकारोंने निषिद्धकरदियाहै तोउनअज्ञा- नियोंकाउत्तर सिवायमौनके औरक्याहोसकताहै क्योंकिबहुत सेआवेशी सदुत्तरपरभीक्रोधकरतेहैं अतएवनीतिकारोंने लिखा भी है कि । (विद्वानेवोपदेष्टव्यो नाविद्वांस्तुकदाचन । वानरानु पदिश्याथ स्थानभ्रष्टाययुःखगाः ।)

इसकासंक्षेपसे यहइतिहासहैकि बयाचिड़ियानेवानरोंको यहउपदेशकियाकि हमलोगहस्तपादहीनहोकेभी खोताबनायके वर्षाकालमेंसुखसेरहतेहैं औरतुमलोगहस्तपादसहितहोके भी निराश्रयभींगतेहोतो इसबातकेसुननेसेवानरोंकोइतनाक्रोधहुआ किहमकोभींयेक्षुद्रजीवउपदेशकरतेहैं तस्मात्इनकीशिक्षाभरपूर करनीचाहिये यहविचारके उनकेखोतोंकोनष्टकरनाशुरूकिया । तभीसेप्रायःवेकटीले वृक्षोंमें अपनाखोतालगातेहैं किजहांपर बानरोंका गम्यनहीं इति मनुष्योंकेलियेस्नानकेबादभोजनकेदोघंटे

पहिलेव्यायामकरनाहितकारीहैतत्रापिसायं स्नानोत्तरविशेषहित कारीइसहेतुहैकिरात्रिभोजनदुग्धप्रधानहोता है सोदुग्धप्रत्येक नाड़ियोमैंयथार्थसंचारितहोताहै व्यायामकेवादस्नानघर्म सेवन आदिवहुतनिषिद्धहैंजबतकउसकीश्रान्ति पूरीपूरीशान्तनहोजावे तबतकभोजनभी अहितहै यद्यपिमलमूत्रादिकावेग जभीहोतभी उसकीविधिहैं क्योंकि छिक्काआदिकिसीतरहके वेगोंकोरोकनेसे नानाविधरोगोंके उत्पत्तिका संभवरहताहै तथापि सायंप्रातःव मध्याह्न तीनवारशौचकाअभ्यारखनाविशेषहितकारीहै। मासमें दोउपोषणकरनेसेशरीरकीअत्यन्तनीरोगतारहतीहै सोदोनोंएका- दशियोंकोधर्मशास्त्रादिसेविहितहीहै। सरदवसंतमें विरेक (जु- लाब) करनेसेभीशरीरकीशुद्धियथार्थरहतीहै परजोलोगशारदव वासंतनवरात्रकाउपोषणकरते हैं वासर्वथाअनुलोमनरखते हैं उनकेलियेविरेककीआवश्यकतानहीहै क्योंकि वहुतग्रंथोंमेंयहभी लिखा है कि मलआदियदिप्रकृतिस्थरहें तोइनकाचालननहीं करना (प्रकृतिस्थंचालयेत्।) प्रातःकालतथासायंकालवाटि काआदिवहिर्देशमें टहलना बहुतहितकारी है तत्रापिप्रातःकाल कावायु अत्यन्तशुद्धरहताहै। रात्रिकोअधिकजागनेसे औरदिन मेंअधिकसोनेसे औरवहुतजलपीनेसे औरदौर्बल्यमेंस्त्रीसंगकरने से औरअपरिपाकमें भोजनकरनेसे नानाविधरोगहोतेहैं तस्मात् इनसबबातोंकोबहुतवचानाचाहियेफलोंमेंअत्यन्तमधुर आम्रफल रीतिसे सेवितहोयतोहितकारीहै प्रायःइसकाभोजनरात्रिमेंलोग अच्छाकहतेहैंऔरइसकेभोजनकेवाददुग्धपानविशेषहितहै। और फालसाआदि शीतवीर्य फलोंका भोजनमध्याह्नमेंउचितहै पर इनमें कोईविशेषगुणनहींहै। औरकटहरकेलाआदितो सर्वथा गरिष्ठहैं अतएव वनेतकइनसेदूरही रहनाचाहिये औरभीइसी तरह तत्तत्प्रकृतितत्तद्देशतत्तत्कालआदिकोंको लोकरीत्यातथा शास्त्ररीत्या विचारकेसर्वथाअनुकूलआहारविहारादिमेंसावधान

रहनाचाहिये क्योंकि यहलेखकेवलदिक्प्रदर्शनमात्रहै इति । अब यहबाततोसभीको विदितहै कि जितनीविद्याहैं सबबुद्धिमान मनुष्योंनेनिकालीहै औरइनकाउपदेशभीकथनद्वारा यद्यपिहो सकताहै तथापिचिरकालतकइनविद्याओंकी स्थितिविनालेख प्रणालीके नहींहोसकती अतएवसभीविद्याओंके चिरस्थितिका प्रधानकारणलेखहीहै । अबइसविषयमें बहुतसेलोगऐसाकहते हैं कि इसभारतवर्षमें जबसेवेदहै तबसे औरजबतकसूत्रबने तबतक एतद्देशीयलोगोंको वर्णलिपिकापरिचयनहीथाकिन्तु केवल कथनश्रवणपरम्परामात्रसे वेदादिकचलेहैं अतएववेदों काश्रुतिनामप्रसिद्धहैं यदिलेखप्रणालीभी पहिलेसेहोतीतोवेदों काश्रुतिनामप्रसिद्ध नहोता औरभी यह कहतेहैं कि यदिपहिले लेखप्रणालीहोतीतो उनप्राचीनग्रन्थोंमें लेखकासूचकभीकोईपद जरूररहतासोनहींमिलता किन्तुकथनश्रवणादिके सूचकही ।
(गायन्तिअवोचाम अधीतेअनुब्रूयात्)
इत्यादिपदमिलतेहैं औरलेखसूचक—
(लिखतिवाचयतिअक्षराणिवर्णाः पत्रं लेखनी)

इत्यादिपदप्रसंगोपात्तभी कहींनहींमिलते तोइससेयहीस्थिर होताहैकि यहलेखप्रणालीप्राचीननहींहैकिन्तु नवीनहै अर्थात् पाणिनीयसूत्रोंके समयतकनहींथीइत्यादि तोइसकाउत्तरबहुतसे लोग यहकहतेहैंकि यदिश्रुतिइसनामहीसे इसबातकाअनुमान होकि वेदकेसमयमें वर्णलेखादिनहींथे तोमन्वादिप्रणीतग्रन्थोंका स्मृतिइसनामसेभी इसबातकाअनुमानहोसकताहै क्योंकि श्रुतिऔरस्मृति इनदोनों नामोंके तात्पर्यमें बहुतकमअन्तरहै अर्थात् पुरानेपुरानेमहर्षियोंने जोमन्त्रसूक्तादिकोंको सुनसुनके जिनजिनवेदकीसंहिताओंका संगृहीतकिया उनकाश्रुतिनामहुआ इसीप्रकारनानावेदोंकीशाखाओंमें जोनानाप्रकारकेधर्मकहेहैं उनकोस्मरणकरकरके जोमन्वादिकोंनेग्रन्थबनाये उनकास्मृति-

नामहुआ सारांशयहहैकि श्रुतिऔरस्मृतियेदोनोंनाम अपने-कारणकोपकड़तेहैं अर्थात्जिनग्रन्थोंकेसंग्रहमें पूर्वपूर्वऋषियोंके वाक्योंकाश्रवणकारणहै उसकाश्रुतिनामहै औरजिनग्रन्थोंके-संग्रहमें पूर्वपूर्ववैदिकधर्मोंका स्मरणकारणहै उनकास्मृतिनामहै अतएवदोनोंनामोंकेतात्पर्यमें बहुतकमअन्तरहै। यदियहकहैंकि स्मृतिकालमेंभीवर्णलेखादिनहींथा सोठीकनहींक्योंकि स्मृति-योंमेंलेखप्रकरण बड़ेविस्तरसेकहेहैं तोयदिलेखादिप्रणालीही-उसकालमेंनहोती तोउसकेपरिष्कारका बोधकप्रकरणस्मृतियोंमें कैसेकहसकते। औरजोयहकहतेहैं कि वेदोंमें लेखप्रणालीके-बोधक (लिखतिवाचयति) इत्यादिपदकहींनहींदेखपड़ते इससे-यहनिश्चयकरतेहैं कि उसकालमेंलेखप्रणाली नहींथीइत्यादि सो-यहकथनविचारपूर्वकनहींहै क्योंकिजितनेवेदहैं सभीप्रायःयज्ञा-दिकके धर्मकेबोधनकेलियेप्रवृत्तहैं तोउनमेंयज्ञकेद्रव्य औरदेवता औरगुण औरस्तुतिइत्यादिकका वर्णनतोउपयुक्तहै सोसभी-वेदोंमेंमिलताहीहै औरलेखप्रणालीका यज्ञमेंउपयोगनहींहै अत-एवतद्विषयकबात वेदोंमेंकमभिलतीहैं। बल्कि पुस्तकदेखके सूक्तमन्त्रादिकोंकापाठकरना यज्ञकीप्रक्रियाकेप्रतिकूलहीहै क्योंकि जोलोगपुस्तकपर सूक्तादिककापाठकरेंगे उनकामनउसकालमें चक्षुरिन्द्रियद्वारा अवश्य पुस्तकदेखनेमेंलगेगा तोमन्त्रोंकेप्रति-पाद्यजोदेवताहैं उनमेंएकाग्रताकीहानि जरूरहोगी अतएवयज्ञमें-शुरूसे मन्त्रसूक्तादिका जपपाठआदिकीरीति विनापुस्तककी-सहायताके केवलवागिन्द्रियैसेचलीहै जिसकोकिआजतकभी अच्छेअच्छेयाज्ञिकलोग निबाहतेहैं अर्थात्यज्ञकालमें पुस्तक-नहींदेखते किन्तु मुखहीसेसबमन्त्रसूक्तादि अस्खलितकहतेहैं। यदि यहकहैंकि वेदोंमेंअधीयते इत्यादिपदोंकेप्रयोगसे लेख-प्रणालीकेअभावका अनुमानकरें सोभीठीकनहींहोसकता क्योंकि

इतनावड़ासमुद्रकेसमान जोवेदग्रंथप्रारंभसे आजतक सुप्रसिद्ध अस्खलितचलाआताहै उसकीस्थिति बिनालेखकी सहायताके नहीसंभावितहोसकतीक्योंकि केवलकथनश्रवणमात्रसेछोटेछोटे ग्रन्थोंमेंभीपाठभेदादिकासंभवहोजाताहैतो कैपुनःइतनेवड़ेग्रन्थमें औरऋग्वेदकेदशममंडलमें लिखाहैकिकोईमनुष्यबाणीको देखता सुनताभीहै परनहींदेखनेसुननेकेबरावरहै अर्थात्जो अबिद्वानहै उसकादेखनासुनना नहींकेसमानहीहै क्योंकिबिनासमझेबूझेउस कादेखनासुननाहोताहै और जोविद्वानहैं उसके लिये वाणीअपने सारांशसंपूर्णहृदयको प्रकाशकरतीहै जैसेस्त्रीअपनेपतिकेसम्मुख अपनाकोईभीअंगनहींछिपाती किन्तुकामुकतावस्थामें सभीअंगों काप्रकाशकरतीहै इसीप्रकारबाणीभी विद्वानोंकेसम्मुखअपनेसभी अंगोंकाप्रकाशकरतीहै ।

(उतत्वःपश्यन्नददर्शवाचमुतत्त्वःशृरावन्नशृणोत्येनाम्उतोत्व- स्मैतन्वाँविसस्रे जायेवपत्यरउशतीसुबासाः)

इत्यादि तोइसबैदिकऋचासे यहबातविस्पष्टमालूमपड़तीहै कि वेदकेकालमेंभी लेखप्रणालीथी अन्यथावाणीकादेखना बिना लेखप्रणालीके औरकैसेसंभवहोसकताहै । औरजोवहुतलोग यह कहतेहैंकि वैदिकमन्त्रोंमें जोतत्तत्स्थलमें पाठभेदादिमिलतेहैंउस सेयहनिश्चितहोताहै किउससमयलेखप्रणालीनहींथी क्योंकिजिन ग्रन्थोंकिलेखप्रणालीहै उनकापाठलेखादिद्वारास्थिररहताहैअत- एवउसमेंपाठभेदादिकासंभवनहींरहता इत्यादि । सोयहभीबात अत्यन्त तुच्छमालूमपड़तीहै क्योंकि स्मृतिकालसेआजतकलेख प्रणालीनिःसन्देहसर्वसंमतहैतोस्मृत्यादिग्रन्थोंमेंभीपाठभेदआदि वहुतदीखपड़तेहैंवल्किवहुतसेग्रन्थतो पाठभेदकीकौनकहेआद्यो- पान्तमिलतेहींनहींहैं औरजोग्रन्थमिलतेहैं उनमेंप्रामाणिकलोग उनउनग्रन्थोंकानामलिखतेहैं अतएवयहनिश्चयहोताहैकिअवश्य

वेग्रन्थथेतोजबयहवातहैकिलेखपूणालीमेंपूतिवद्धग्रन्थसमुदायही नहींमिलतेतो फेरयहभीसंभवहोसकताहैकि लेखकोंकेपूमादसे पाठभेदलिखितपुस्तकमेंभीहुआहै अधिकपूाचीनग्रन्थोंकीवाततो दूररहेजोअत्यन्तनवीनग्रन्थरघुवंशआदिहैं इनमेंभी जगतपूसिद्ध विद्वान भट्टोजीदीक्षितआदिकोंनेभी पाठभेददिखायेहैं।
(विस्मापयन्विस्मितमात्मवृत्तौ)

इसद्वितीयसर्गके श्लोकमें (विस्मायपन्) ऐसा पाठ भेद सिद्धान्तकौमुदीके ण्यन्तप्रकरणमेंकहाहै एवंचतुर्थसर्गके।
(इक्षुच्छायानिषादिन्य)

इसश्लोकमें (इक्षुच्छायनिषादिन्य) ऐसा पाठभेद कहा है तस्मात्केवलपाठभेदके देखनेसेयहनहीस्थिरहोसकताकि यहले-खादिप्रणाली प्राचीननहींहै किन्तु नवीनहैइत्यादि। अबवेदोंमें अकारइकारादिककेवाचकअक्षरशब्दजहांहैं उसकाउदाहरणदिया जाताहै ऐतरेयब्राह्मणकी प्रथमपंचिकाकेद्वितीयखंडमें।

(तदाहुर्यदेकादशकपालः पुरोडाशोद्वावग्नाविष्णूकैनयोस्तत्र-क्लृप्तिः काविभक्तिरितिअष्टकपालआग्नेयोष्टाक्षरावैगायत्री गायत्र मग्नेश्छन्दस्त्रिहींदम् विष्णुर्विचक्रमतसैनयोस्तत्रक्लृप्तिः)

इसमन्त्रमें गायत्रीकाअष्टाक्षरपादकहाहै तथाइसीब्राह्मणमें प्रथमाध्यायके पंचमखंडमें।
(अनुष्टुभास्वर्गकामः कुर्वीतद्वयोर्वाअनुष्टुभोश्चतुष्षष्टिरक्षराणि) ऐसाकहाहै तोइसमेंभीवत्तीसअक्षरोंका एकअनुष्टुपछ-न्दहोताहै यहवातस्पष्टहै। तथाशुक्लयजुर्वेदकेतेइसवेंअध्यायके अश्वमेधप्रकरणमें (कत्यस्यविष्ठाः कत्यक्षराणि) यहप्रश्नकरके (षड्स्थविष्ठाः शतमक्षराणि) यहसमाधानकियाहै तोइसमेंभी अक्षरपद आयाहैअबइसमेंउक्तमन्त्रकायहतात्पर्यहैकि यज्ञकेअन्त मधुरअम्लआदिषड्रसहोतेहैंऔरव्यंजनसहित अज्रूपसबअक्षर होतेहैं। अबयदिइसमेंकोईयहशंकाकरै कियज्ञमेंवहुतसेमन्त्रोंका

विनियोगकहाहै तोउसमेंसबअक्षरकीगिनती किसहिसावसेहैतो इसकासमाधान भाष्यकारनेऐसाकहाहै कि याज्ञिककर्ममेंगायत्री आदिछन्दोंसेयुक्तमन्त्रोंकाविनियोगकहाहै तोउनछन्दोंमेंप्रथमसे क्रमशः एकएकचढ़तेजाना और अन्तिमसेक्रमशःएकएकउतरते आना इसक्रमसे जोड़ेजोड़ेमन्त्रोंके सवसवअक्षरहोतेहैं औरइसी प्रकारसे जोड़ेजोड़ेमन्त्रोंकायज्ञमेंविनियोगभीहैयथागायत्रीके२४ चौवीसअक्षरऔरअतिधृतिके ७६ अक्षरइनदोनोंकोमिलानेसेसव हुये एवंउष्णिहके २८ औरधृतिके७२एदोनोंमिलके१०० एवंअनु- ष्टुपके ३२ औरअत्यष्टिके ६८ एदोनोंमिलके १०० तथावृहतीके ३६ औरअष्टिके ६४ एदोनोंमिलके १०० तथापंक्तिके४०औ अति शक्वरीके ६० येदोनोंमिलके १०० तथात्रिष्टुपके४४औरशक्वरीके ५६ एदोनोंमिलके १०० तथा जगतीके४८ और अतिजगतीके५२ येदोनोंमिलके १०० यहीक्रमभाष्यकारोक्तसमझनाचाहियेतथाऐत रेयब्राह्मणकी प्रथम पंचिकाके इकीसवेंखंडमें ।

(इत्येतैरेवैनंतत्कामैस्समर्द्धयतीतिनुपूर्वम्पटलम्)

ऐसाकहाहैतोइसमेंपटलशब्द ग्रथकेखंडविशेषकानामहै तो- इससे अवश्ययहसिद्धहोताहैकिउससमयमेंभी भोजपत्रआदिपर लिखनेकीचालीअवश्यथी तथाशतपथब्राह्मणके अष्टमकाण्डके चयनप्रकरणमें छन्दस्यानामक ईंटोंकास्थापनलिखाहै ।

(अथछन्दस्याउपदधाति)

इत्यादि औरउसीजगहछन्दःशब्दका अर्थभीयहदिखायाहैकि जोछादनकरै उसीकाछन्दनामहै तोइससेभीयहसिद्धहोताहै कि उस समयवृक्षोंके त्वक्पत्रआदिजो छादनकेसाधनहैं उनमें- लेखनकीरीतिथी औरऋग्वेदमेंभी छन्दःशब्दका वहुतजगहप्रयो- गमिलताहै औरशुक्लयजुर्वेदके पन्द्रहवेंअध्यायमें ।

(एवश्छन्दोवरिवश्छन्द)

इत्यादिमन्त्रमें (क्षुरभ्रजश्छन्द) ऐसापढ़ा है औरइसमन्त्र-

काअर्थ शतपथब्राह्मणके अष्टमकाण्डके चयनप्रकरणमें बिराटरूपकीभावनाके तात्पर्यसेयहकहाहै कि (एवश्छन्द) काभूलोकमें तात्पर्यहै और (वरिवश्छन्द) काअन्तरिक्षलोकमेंतात्पर्यहै तोउसमें (क्षुरभ्रज) शब्दकायहीअर्थहोताहैकि लोहकीशलाकासे लेखद्वाराजोप्रकाशितहोय तोइससेयहबात विस्पष्टहोतीहैकि उससमयकीलेखरीति लोहकीशलाकासे पत्रआदिकोपरखोदके थी क्योंकि व्याकरणमें (क्षुरविलेखने) यहधातुलेखनार्थक प्रसिद्धहै तोअवश्ययहसिद्धहोताहै कि उससमय ताडपत्रआदिकोंपर लोहेकीकीलसे लकीरकरके लिखनेकासंप्रदायथा जोकिआजतक तैलंगद्राविड़ ओड़ीशाआदिदेशोंमें प्रचलितहै औरभीशतपथब्राह्मणके दशमकाण्डमें।

(अथसर्वाणिभूतानिपर्यैक्षतसत्रय्यामेवविद्यायाम्)

इत्यादिमन्त्रसे तीनोंवेदोंको प्रजापतिकेवर्षकी समतादिखानेकेलिये यहकहाकि दशहजारआठसौ मुहूर्तसालके होतेहै उतनेहीपंक्ति युग्मवेदत्रयकेहोतेहैं यहकहकेअंत्यमें यहउपसंहारकिया कि जैसेवर्षकेसूक्ष्म अवयवमुहूर्तहैं उसीतरहवेदत्रयीके सूक्ष्मअवयवहैपंक्तियुग्मभीहै।

(अष्टशताधिकदशसहस्त्रसंख्याकानिसंवत्सरस्यमुहूर्ताति तावन्त्येवचवेदत्रयस्यपंक्तियुग्मानि) संवत्सरस्यसूक्ष्मो वयवो यथामुहूर्त्तस्तथा त्रय्याविद्याया अपिसूक्ष्मोवयवः पंक्तियुग्मम्)

इत्यादि सोइसकीउपपत्ति इसचालसेहोतीहैकि दोदण्डकामुहूर्त्तहोताहै तोतीसमुहूर्त्तका एकदिनरातहुआ औरतीनसैसाठ दिनरातकाएकवर्षहोताहै तोतीसकोतीनसैसाठसे गुणनकरनेसे दशहजारआठसौहोतेहै इसीप्रकार अस्सीअक्षरके पंक्तियुग्मरखनेसे आठसौदशहजार पंक्तियुग्मतीनोवेदकेहोतेहैं तबतोप्रजापतिबर्षकी समतावेदत्रयीसेहुई सोयहकल्पना विनालिखितपु-

स्तकके नहींहोसकती क्योंकि आजतकश्लोकादिसंख्या लिखितपुस्तकपरगिनतीकरनेहीसे सबविद्वानलोगकरतेहैं तस्मात्यहबात अवश्यस्वीकर्त्तव्यहै किपहिलेसेभी लिखनेकीचाली चलीआतीहै औरयहलेखप्रणाली नवीननहींहै इत्यादि परबहुतलोग इसविचारपरयहभीकहतेहैं कि यदिलेखप्रणाली प्राचीननभीहोतो भी इसभारतवर्षकी किसीप्रकारकीन्यूनता नहींसंभावितहोसकती क्योंकि यहबातसर्वानुभवसिद्धहै किलेखप्रणाली केवलअभ्यासकी सहायताकेलियेहै तोयदिऐसेधारणावाले मनुष्यहोंकि एकदोबारकहनेहीसे हृतकमलपत्रोंमें उपदेशलेखनीद्वारा उनपदपदार्थोंको ऐसालिखलेवैंकि जोजन्मान्तरमेंभी सूक्ष्मशरीरके साथहीरहें किन्तुनष्टनहो तोभूर्जपत्रतालपत्रकागज आदिकोंपर लोहकीलअष्टांगमसीआदिसेलिखनेकी क्याआवश्यकताहै क्योंकि वहसबलेखबिनाशीहै औरवहहृदयलेख नअग्निसेजलसकै औरनजलसेगलसकै औरनवायुसेउड़सकैअतएववहअविनाशीहै । औरजोयहकहतेहैंकि इतनाबड़ावेद विनालिखेपढ़े कैसेस्थिररहताहै सोतोजिसकोजैसी धारणाहै उसकोउतनाही स्थिररहसकताहै तोआगेकेलोग विशेषधारणावान्थे यहबातनिःसंदेहहै क्योंकि सृष्टिकेप्रारम्भमें ब्रह्मदेवने जबसबवेदोंका स्मरणकरके उपदेशकियाहोगा उससमय पत्रलेखनीआदि अवश्यनरहेहोंगे बल्किप्राचीन ग्रन्थोंकेदेखनेसे यहभीमालूमपड़ताहै कि कपिलआदिमहर्षियोंको बिनाकिसीकेउपदेशही सबवेदोंकाभानहुआ तोयदिइसश्रेणीकेलोग उससमयमेंथे तोउपदेशकिये हुयेवेदोंका धारणकरना कौनकठिनहै क्योंकि भोजराजकेसमयमें एकबारकहनेसे तथादोबारकहनेसे तथातीनबारकहनेसे धारणकरनेवाले बहुतबिद्वान्थे यहबातभोजप्रबन्धादि बहुतग्रन्थोंमेंप्रसिद्धहै औरअबतकभीबहुतसेवैदिककाशी

तथादक्षिणदेशआदिमें वर्तमानहैंकि जिनकोअक्षरका परिचय-बिलकुलनहींहै औरसंपूर्णवेद अस्खलितमुखसे पारायणकरतेहैं तोउससमयकी धारणातो बहुतहीअधिकथी क्योंकि प्राचीनइतिहासोंसे यहबातसिद्धहोतीहैकि आगेकेलोग बहुतथोड़ेहीउपदेश-से बहुतअधिक समझतेथे औरउसकोअधिककरके क्रमशः यथोचित्त शिष्यप्रशिष्योंको उपदेशभीकरतेथे क्योंकिमहेश्वर-जीने महर्षियोंको चतुर्दशसूत्रीसे केवलवर्णोंका उपदेशकिया यह बातनन्दिकेश्वरकृतकाशिकामेंलिखाहैउतनेहीउपदेशसे पाणिनिमुनिने अष्टाध्यायीधातुपाठगणपाठआदिग्रन्थोंकोबनाया तन्मूलक कात्यायनमुनिनेवार्त्तिकआदिग्रन्थोंकोबनायातदनन्तरपतञ्जलि मुनिने तन्मूलकमहाभाष्यआदिबड़ेबड़ेग्रन्थोंकोबनाया तदनन्तर कैयटोपाध्याय जयादित्यन्यासकार हरदत्तमिश्र सीरदेव भट्टोजिदीक्षित नागोजिभट्ट आदिविद्वानोंने उन्हींग्रंथोंसे निकाल-निकालके भाष्यप्रदीप काशिका वृत्तिन्यास पदमंजरी परिभाषा-वृत्ति शब्दकौस्तुभ भाष्यप्रदीपोद्योतआदि बड़ेबड़ेग्रन्थोंको बनाया यहतोकेवल संक्षेपसे पाणिनीयव्याकरणका इतिहासहै इसीप्रकारन्याय वैशेषिक पूर्वमीमांसा उत्तरमीमांसा सांख्य-योगआदि सभीदर्शनोंका क्रमशः बढ़नाआबालप्रसिद्धहै तबतो यही सिद्धहोताहैकिज्योंज्योंमनुष्योंकीबुद्धिहीनहोतीजातीहैउतनाही ग्रंथविस्तर होताजाताहै औरयहबात सर्वानुभवसिद्धभीहैकिजो जितनाहीअधिक बुद्धिमानहै उसेउतनाहीकम उपदेशकीअपेक्षा है औरजोजितनाहींकमबुद्धिमानहै उसेउतनाहीं अधिकउपदेश कीअपेक्षाहैइसीप्रकारलेखादिकेविषयमेंभीसमझनाचाहिये क्योंकि अभीतकभी प्राचीनलिखितपुस्तकेजोमिलतीहैं उनमेंपंक्ति विभाग वाक्यविभागपदविभागआदि केचिहकुछभीनहींमिलते तदनन्तरकी जोपुस्तकें मिलतीहैंउनमेंगेरूआदिकीलकीरक्वचित

क्वचितमिलतीहैं तदनन्तरकी लिखितपुस्कोंमें पाईविन्दुआदि भीमिलतेहैं जबसेपुस्तकोंकेछपनेकीचालचलीतबसेक्रमशःकामा पाईब्राकिटसिमीकोलनसूक्ष्माक्षरस्थूलाक्षरपंक्तिभेद पृष्ठभेदपत्रभेद सूचीपत्रशुद्धिपत्रआदिकी दिनदिनवृद्धिही होतीजातीहै तो अब इनसबबातोंकेदेखनेसे केवलयहीकल्पना करनाकि आगेकेलोग इनसबबातोंको समझतेहीनहींथे और इनसबबातोंके नरहनेसे हानिउठातेथे इत्यादिसोकहना असंभवहै क्योंकि आगेकेलोगो को ज्ञानवृद्धिवलाभवृद्धिउनके ग्रंथोंहीके देखनेसे बुद्धिमानवि-द्वानोंकोमालूमपड़सकताहै क्योंकिबहुतप्राचीनोंकीतोकथाहीक्या वेलोगतोसूत्रकारमहर्षिमहामुनिआदिकीकोटिमें थे परजोबीस पचीससैवरसकेपहिलेशबरस्वामीआदिमहाशय हुये उनकेग्रंथों कोभीयहहालहैकिआजकालके महाबुद्धिमान जन्मभरजोशास्त्रा-भ्यासकरतेहैंउनकोभीसवांशनहींस्फुटहोताउससेभीनवीनउदय नाचार्यकृतवौद्धधिक्कार श्रीहर्षमिश्रकृत खंडनखाद्य आदिग्रन्थ भीऐसेहैंकि जोसबकोअबतकभीनहीलगतेतो अवश्ययहबाततो निश्चितहीहैकिजबकेबनेयेसबग्रंथहैं तबकामापाईहाइफनब्राकिट आदिकुछभीनहींथे क्योंकिउससमयकीलिखितपुस्तकें भीआजत कप्रसिद्धपूसिद्धस्थानोंमेंरखीहैतोउनकेदेखनेसेसभीकोयहनिर्भ्रा-न्तहोसकताहैकितबकं पुस्तकलिखनेकीरीति ,कैसीथीऔरयहभी बातविचारवानको अनायासेन निर्णीतहोसकतीहै किज्योंज्यों लिखने छापनेआदिकीसफाई तथाअधिकाई होतीजातीहै त्यों त्योंग्रन्थोंकाअभ्यासलोगोंकानितान्तक्षीणहोताजाताहैबल्किबहुत लोगतो ऐसे पुस्तकावलम्बी होगयेहैंकि जिनपुस्तकोंमेंसूचीपत्र आदि नहींहै उनमेंकीबातनिकालनाउनको असम्भवहीहोरहा है बहुतसेलोगऐसेभीहोरहेहैंकि छापाकेभरोसे अक्षरलेखादि सीखतेहींनही वासीखेभीरहतेहैं तोभूलजातेहैंऔरइङ्गरेजीअक्षर

तोलिखनेकेभिन्नहैं औरछापेकेभिन्नहै अतएवउनअक्षरोंके अ-
भ्यासीलोगोंकोतोअक्षरलेखआदिभीसीखना आवश्यकपड़ता है
तबतोसारांसयहीहुआकियदिअत्यंतप्राचीनसमयमें लेखआदिकी
प्रणालीनरहीहोगी तबअवश्यलोगअभ्यासी श्रुतिधरशतावधान
बहुतसेरहेहोंगे तो बड़ेभारीउद्योगसे परमप्राचीनसमयमेंभी
लेखादिप्रणालीकोसिद्धकरकेउससमयकेलोगोंकोभीवर्त्तमानसमय
केलोगोंकेसदृशअनभ्यासीवअनभिज्ञठहरानाकेवलनिष्फलहीनहीं
हैकिंतुनिर्मूलभीहैऔरजोऋग्वेदकीऋचामेंवाणीकादर्शनलिखाहै
उसकातात्पर्यकजलीआदिकादेखनानहींहैकिंतुमानदर्शनविचाररू-
पहैऔरजोअक्षरशब्दवहुतजगहहै वेदमेंमिलतेहैं उनकीभीउपपत्ति
केवललेखप्रणालीहीसेनहींहैक्योंकि बोलनेसुननेआदिमेंभी अक्षर
व्यवहार आजतकप्रसिद्धहैऔरजोगायत्रीआदिछन्दोंकीगिनतीहैं
वहभीनितान्त अनभिज्ञकोतो चाहेबिनालिखेनहोसके परजोधा-
रणावालेहैं उनकोतोभलीभांति कथनश्रवणसेउनकीगिनतीहो-
सकतीहै इसीप्रकार पटलआदिकीगिनतीभी लेखप्रणालीकेवि-
नाभी होसकतीहै औरछन्दःशब्दजो छादनार्थक वेदोंमेंमिलताहै
उससेलेखप्रणालीका सिद्धकरनातो बहुतहीविप्रकृष्टहै औरक्षुर-
भ्रजश्छन्द, इसमेंक्षुरधातुका लेखनअर्थनहींहै किन्तु विलेखन
(भेदन) अर्थहै सोआजतक केशकाटनेआदिका जोशस्त्रहै उ-
सका क्षुरनामप्रसिद्धहै औरशतपथब्राह्मणमें जोपंक्तियुग्मकी-
गिनतीहै वहभी कथनश्रवणमात्रसे होसकतीहै औरपंक्तिपदेन
वहाँपर छन्दोविशेषभीलेसकतेहैं क्योंकि वहछन्दभी चालीस-
अक्षरकाहोताहै इत्यादितबतोयहसवपूर्वोक्त युक्तियाँदेखीनहींहै
कि परमप्राचीनसमयमेंलेखप्रणालीको अवश्यसिद्धकरसके
बल्किपाणिनीयशिक्षा आदिग्रन्थोंमेंलिखके पढ़नेकीचालीको
निन्दितलिखाहै (गीतीशीघ्रीशिरःकम्पी तथालिखितपाठकः

अनर्थज्ञोल्पकण्ठश्च षड़ेतेपाठकाधमाः ॥) परहांआजकलह-
लोग ऐसेविस्मरण बुद्धिहुयेहैं कि बिनालिखेउनकापढ़ना होही-
नहींसकता तोइसकेलिये दिनदिन लेखपूणालीकी छापाआदि-
द्वारा वृद्धिहोतीहीजातीहै इत्यलम् ॥

श्रीमद्भगवतगीतायामधुसूदनोक्तोपक्रमः

भगवत्पादभाष्यर्थ मालोच्याति प्रयत्नतः ॥ प्राग्यःप्रत्यत्तरं
कुर्वेगीतागूढ़ार्थदीपिकाम् ॥ १ ॥ सहेतुकस्य संसारस्यात्यन्तो
परमात्मकम् ॥ परंनिःश्रेयसं गीताशास्त्र स्योक्तं प्रयोजनम् ॥२॥
सच्चिदानन्द रूपंतत्पूर्णं विष्णोः परंपदम् ॥ यत्प्राप्तयेसमा-
रब्धावेदाः काण्डत्रयात्मकाः ॥३॥ कर्मोपास्ति स्तथाज्ञानमिति-
काण्डत्रयंक्रमात् ॥ तद्रूपोष्टादशाध्यायैर्गीताकाण्डत्रयात्मिका
॥ ४ ॥ एकमेकेनषट्केन काण्डमत्रोपलक्षयेत् ॥ कर्मनिष्ठाज्ञान
निष्ठे कथिते प्रथमान्त्ययोः ॥ ५ ॥ यतःसमुच्चयोनास्तितयोर
तिबिरोधतः ॥ भगवद्भक्ति निष्ठातु मध्यमेपरिकीर्तिता ॥ ६ ॥
उभयानुगतासाहि सर्वविघ्नापनोदिनी ॥ कर्ममिश्राच शुद्धा
चज्ञानमिश्राच सात्रिधा ॥ ७ ॥ तत्रतुप्रथमे काण्डे कर्मतत्त्याग
वर्त्मना ॥ त्वंपदार्थो विशुद्धात्मासोपपत्तिर्निरूप्यते ॥ ८ ॥
द्वितीये भगवद्भक्ति निष्ठावर्णनवर्त्मना ॥ भगवान्परमानन्द
स्तत्पदार्थोऽवधार्यते ॥ ९ ॥ तृतीयेतु तयोरैक्यं वाक्यार्थो
वर्ण्यतेस्फुटम् ॥ एवमप्यत्रकाण्डानां संबन्धोऽस्तिपरस्परम्
॥ १० ॥ प्रत्यध्यायंविशेषस्तुतत्रतत्रैव वक्ष्यते ॥ मुक्तिसाधन
पर्वेदंशास्त्रार्थत्वेनकथ्यते ॥ ११ ॥ निष्काम कर्मानुष्ठानंत्यागा-
त्काम्यनिषिद्धयोः ॥ तत्रापिपरमोधर्मोजपस्तुत्यादिकंहरेः ॥१२॥
क्षीणपापस्यचित्तस्य विवेके योग्यतायदा ॥ नित्यानित्यविवेक
स्तुजायते सुदृढ़स्तदा ॥ १३ ॥ इहामुत्रार्थवैराग्यं वशीकारा

भिधंक्रमात् ॥ ततःशमादिसंपत्त्या सन्यासोनिष्ठितोभवेत् ॥१४॥ एवंसर्वपरित्यागान्मुमुक्षाजायतेदृढा॥ततोगुरूपसदनमुपदेशग्रहस्ततः ॥ १५ ॥ ततःसन्देहहानायवेदान्तश्रवणादिकम् ॥ सर्वमुत्तरमीमांसा शास्त्रमत्रोपयुज्यते ॥ १६ ॥ ततस्तत्परिपाकेण निदिध्यासननिष्ठता ॥ योगशास्त्रं तुसम्पूर्णमुपक्षीणंभवेदिह॥१७॥ क्षीणदोषेततश्चित्ते वाक्यात्तत्त्वमतिर्भवेत् ॥ साक्षात्कारोनिर्विकल्पःशब्दादेवोपजायते ॥ १८ ॥ अविद्याविनिवृत्तिस्तुतत्त्वज्ञानोदयेभवेत् ॥ ततआवरणेक्षीणेक्षीयतेभ्रमसंशयौ ॥ १९ ॥ अनारब्धानिकर्माणिनश्यन्त्येवसमन्ततः ॥ नत्वागामीनिजायन्तेतत्त्वज्ञानप्रभावतः ॥ २० ॥ प्रारब्धकर्म विक्षेपाद्वासनातुननश्यति ॥ सासवतो वलवतासंयमेनोपशाम्यति ॥ २१ ॥ संयमो धारणा ध्यानं समाधिरितियत्त्रिकम् ॥ यमादिपंचकंपूर्वंतदर्थमुपयुज्यते ॥ २२ ॥ ईश्वरप्रणिधानात्तु समाधिःसिद्ध्यतिद्रुतम् ॥ ततोभवेन्मनो नाशोवासनाक्षयएवच ॥ २३ ॥ तत्त्वज्ञानंमनोनाशो वासनाक्षयइत्यपि ॥ युगपत्त्रितयाभ्यासाज्जीवन्मुक्तिर्दृढाभवेत् ॥ २४ ॥ विद्वत्संन्यासकथनमेतदर्थंश्रुतौकृतम् ॥ प्रागसिद्धो एवांशोयत्नःस्यात्तस्य साधने ॥ २५ ॥ निरुद्धेचेतसिपुरासविकल्पसमाधिना ॥ निर्विकल्पसमाधिस्तुभवेदत्रत्रिभूमिकः ॥२६॥ व्युत्तिष्ठतेस्वतस्त्वाद्येद्वितीयेपरबोधितः ॥ अन्तेव्युत्तिष्ठतेनैव सदाभवतितन्मयः ॥ २७ ॥ एवंभूतोब्राह्मणःस्याद्वरिष्ठोब्रह्मवादिनाम् ॥ गुणातीतःस्थितप्रज्ञो विष्णुभक्तश्चकथ्यते ॥ २८ ॥ अतिवर्णाश्रमीजीवन्मुक्तआत्मरतिस्तथा ॥ एतस्यकृतकृत्यत्वाच्छास्त्रमस्मान्निवर्तते ॥ २९ ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथ्यादेवेतथा गुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशन्तेमहात्मनः ॥ ३० ॥ इत्यादि श्रुतिमानेनकायेनमनसागिरा ॥ सर्वावस्थासुभगवद्भक्तिरत्रोपयुज्यते ॥ ३१ ॥ पूर्वभूमौकृताभक्तिरुत्तरांभूमिमानयेत् ॥

अन्यथाविघ्नबाहुल्यात्फलसिद्धिःसुदुर्लभा ॥ ३२ ॥ पूर्वा-
भ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोपिसः ॥ अनेक जन्मसंसिद्धइत्यादि-
चवचोहरेः ॥ ३३ ॥ यदिप्राग्भवसंस्कारस्याचिन्त्यत्वा-
त्तुकश्चन ॥ प्रागेवकृतकृत्यः स्यादाकाशफलपातवत् ॥
॥ ३४ ॥ नतंप्रतिकृतार्थत्वाच्छास्त्रमारब्धुमिष्यते ॥ प्राक्-
सिद्धसाधनाभ्यासादुर्ज्ञेया भगवत्कृपा ॥ ३५ ॥ एवंप्राग्-
भूमिसिद्धावप्युत्तरोत्तरभूमये ॥ विधेयाभगवद्भक्तिस्तांविनासा-
नसिद्ध्यति ॥ ३६ ॥ जीवनमुक्ति दशायांतुनभक्तेःफलकल्पना ॥
अद्वेष्टृत्वादिवत्तेषांस्वभावो भजनंहरेः ॥ ३७ ॥ आत्मारामाश्च-
मुनयोनिर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे ॥ कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्ति मित्थंभूतगु-
णोहरिः ॥ ३८ ॥ तेषांज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥
इत्यादिवचनात्प्रेमभक्तोयंमुख्यउच्यते ॥ ३९ ॥ एतत्सर्वंभगव-
तागीता शास्त्रे प्रकाशितम् ॥ अतोव्याख्यातुमेतन्मे मनउत्सहते
भृशम् ॥ ४० ॥ निष्काम कर्मानुष्ठानंमूलंमोक्षस्यकीर्तितम् ॥
शोकादि रासुरःपाप्मातस्यचप्रतिबन्धकः ॥ ४१ ॥ यतःस्वधर्म-
विभ्रंशः प्रतिषिद्धस्य सेवनम् ॥ फलाभिसन्धिपूर्वावा साहंकारा
क्रियाभवेत् ॥ ४२ ॥ आविष्टःपुरुषोनित्य मेवमासुर पाप्मभिः ॥
पुमर्थलाभायोग्यःसन् लभतेदुःख सन्ततिम् ॥ ४३ ॥ दुःखंस्व-
भावतोद्वेष्यं सर्वेषां प्राणिनामिह ॥ अतस्तत्साधनंत्याज्यंशोक
मोहादिकंसदा ॥ ४४ ॥ अनादिभवसन्ताननिगूढंदुःखकारणम् ॥
दुस्त्यजंशोक मोहादि केनोपायेनहीयताम् ॥ ४५ ॥ एवमाकां-
क्षयामविष्टं पुरुषार्थोन्मुखंनरम् ॥ बुबोधयिषुराहेदंभगवान्
शास्त्रमुत्तमम् ॥ ४६ ॥

॥ इति ॥

कलिकातापाठशालाध्यापकोऽनल्पदर्शनः॥तर्कवाचस्पतिस्तारा-
नाथोऽन्ते काशिमाप्तवान्॥५॥राखालन्यायरत्नस्य भट्टपल्लीनिवा-
सिनः ॥ हथुआधिपतिः काश्यामन्तेवासमकारयत् ॥६॥ तस्या-
नुजस्तर्करत्न तारा चरण उग्रधीः ॥ काशिराजाश्रितः काश्यां
मरणान्तं प्रतिष्ठितः ॥७॥ साहित्यतन्त्रयोरेकोऽध्यापको बहुवि-
त्तमः ॥ धीमट्ठाकुरदासः श्रीकाश्यामान्तं प्रतिष्ठितः ॥ ८ ॥
वङ्गव्याकरणस्याद्योऽध्यापकान्तं शिरोमणिः ॥ आऽन्तंप्रतिष्ठितः
काश्यां कृतीमदनमोहनः ॥९॥ काशीपाठालयन्यायाद्यध्यापकशि-
रोमणिः ॥ कैलासचन्द्रः सर्वज्ञो धात्रीग्रामात् समागतः ॥ १० ॥
काशीविद्वत्सभामुख्यो जगन्नाथः सुधी वरः तस्यानुजोऽन्तेवासी
च रघुनाथोऽपितादृशः ॥ १ ॥ तच्छिष्यः काशिनाथोऽपि काशी
विद्वद्धुरांधरः ॥ कालेकराह्वयो राजारामस्तच्छात्र उग्रधीः ॥२॥
तच्छिष्योरानड़ेविश्वनाथः साक्षाद्गुरुःसताम् ॥ बालशास्त्रीति
विख्यातो वेदशास्त्राब्धिपारगः॥ ३ ॥ तच्छिष्याः शाब्दिकाःप्राय
स्सर्वदेशेऽतिविश्रुताः॥बहवोऽद्यापियद्विद्यावंशोभूमौव्यजायते॥४॥
सखारामोभट्ट भट्टः काशीविद्वत्सभाग्रणीः ॥ तस्य भ्रातुःसुतोन-
ऽन्तरामोव्याकरणे पटुः ॥१॥ धर्माधिकारी चतुरो ढुण्ढिराजा-
ख्यपण्डितः ॥ वेणीरामः पन्तशेषकुले पण्डित उत्तमः ॥ २ ॥
चतुर्द्धरो वैद्यनाथो ग्रन्थोपस्थितिविश्रुतः ॥ भीषापाठक
उत्कृष्टः पञ्चास्यो व्याकृतौ सदा ॥३॥ नारायणो देवधरस्तच्छि
ष्योऽपितथोग्रधीः ॥ एषांविद्यावंशधरा विरला एवभूतले ॥ ४ ॥
[illegible]न कुलीनः श्री ५ चन्द्रशेखर पण्डितः ॥ पिण्डी
[illegible]तः काशीविद्वत्सभाग्रणीः ॥ हीरानन्द चतुर्वेदोधर्मा-
[illegible]धिपः ॥ पश्चिमोत्तरभूभागे भारते बहुदर्शनः ॥ १२ ॥
[illegible]ति प्रसिद्धोमारामः सुकुलपण्डितः ॥ काशिराजाश्रित
[illegible]: पाठालयसुधीवरः ॥ ३ ॥ श्रौत्राहन्तीचणःसाक्षाद् गुरुर्वि-
[illegible]ाब्धिपारगः ॥श्रीद्देवदत्तोब्रह्मर्षिः सुधीः काशीपतिप्रियः ॥४॥
तस्याग्रजेन विद्वच्छ्री ६ भवानीदत्तशर्मणा ॥ पालितः पाठितो

दुर्गादत्तस्तादृक् स्वसुः सुतः ॥५॥ परिभाषेन्दुटीकाकृद् या श्वर
उदग्रधीः ॥ काशीविद्वद्दलपतिर्वस्तीराम्भोऽपि परि...
घनश्यामो गौड़जातिः संस्कर्त्ताविणिजां कृती ॥ श्री
द्विरुद्धाः सारस्वतविपश्चितः ॥७॥ अयोध्यास्थप्रसिद्
रस्य गोत्रजाः ॥ श्री बच्चनपतिर्वाग्मी निरीक्षणपति
कुबेरपतिरेतेतूदारवंश्यास्त्रिपाठिनः ॥ धीरो वेचनरा
लाद्यः प्रसादवित् ॥६॥ त्रिपाठिनौ सुशीलत्वेव्युत्पत्त
बुभौ ॥ प्रभाकरस्तत्सतीर्थ्यस्तपोनिष्ठो द्विजोत्तमः ॥१०॥ मुख्
धर्माधिकरणाध्यक्षः श्रीरामनाथवित् ॥ श्री ६ देवदत्तसुधियामि
मेऽन्ये चान्तवासिनः ॥११॥ प्राचीनः पाठशालीयो धर्मशास्त्रस्य
पाठकः ॥ गुलजाराख्य धीरोऽपि सरयूपारिवाडवः ॥ १२
ओझाचन्द्रधरोवाग्मी स्मेरास्यः काल्युपासकः ॥ ओझामनोहर
ऽप्येवं काशी स्तुतिरतः सदा ॥ १ ॥ नैयायिको विश्वनाथश्
काश्यां श्रद्धयाऽवसत् ॥ तथा संगमलालोझा काश्यामा
प्रतिष्ठितः ॥ २ ॥ मीमांसाद्वयसाहित्यपाणिनीयादिपारदृक् ॥
न्यायाद्यध्यापकः साम्बशास्त्रीद्रविड़ वाक्पतिः ॥१॥ चिरंप्रति
ष्ठितः काश्यांश्रौत्राहन्तीचणात्मजः ॥ पूर्वंपितात्मजः पश्चात्
सन्यस्य शिवतांगतौ ॥ २ ॥ सुब्रह्मण्यंतत्सखं श्रीलक्ष्मीश्वरनृपो
भूतिम् ॥ दत्त्वाऽग्निहोत्रिणं काश्यां यावज्जीवमवासयत् ॥ ३ ॥
नारायणपतिर्धीमान् सुधाकर उमापतिः ॥ ख्यातः शिवकुमार
श्रीरामकृष्णःसुखावहाः ॥ वासुदेवश्चन्द्रधरश्चन्द्रभूषणईश्वरा
चन्द्रचूड़ः सन्तुचन्द्रशेखरश्चन्द्रभूषिताः ॥ भैरवो हनुमान्काशी
प्रसादः परमेश्वरः रामेश्वरो गणेशः श्रीगोपालः पान्तुनिर्जराः ॥

श्री ६ भवानीदत्तधीरः सीताराम स्तथानुजः ॥ श्री ६
विष्णुदत्त श्री ६ गौरीशंकरौतनुजौ तयोः ॥१॥ विद्वच्छ्री ६ हनु-
मद्दत्त श्री ६ विश्वेश्वरनामकौ ॥ मिथः पितृव्य पुत्रौ, ते सर्वे
वन्द्या विपश्चितः ॥ २ ॥